# पूर्ण गुरु

लेखक : स्वामी ज्ञानोदय

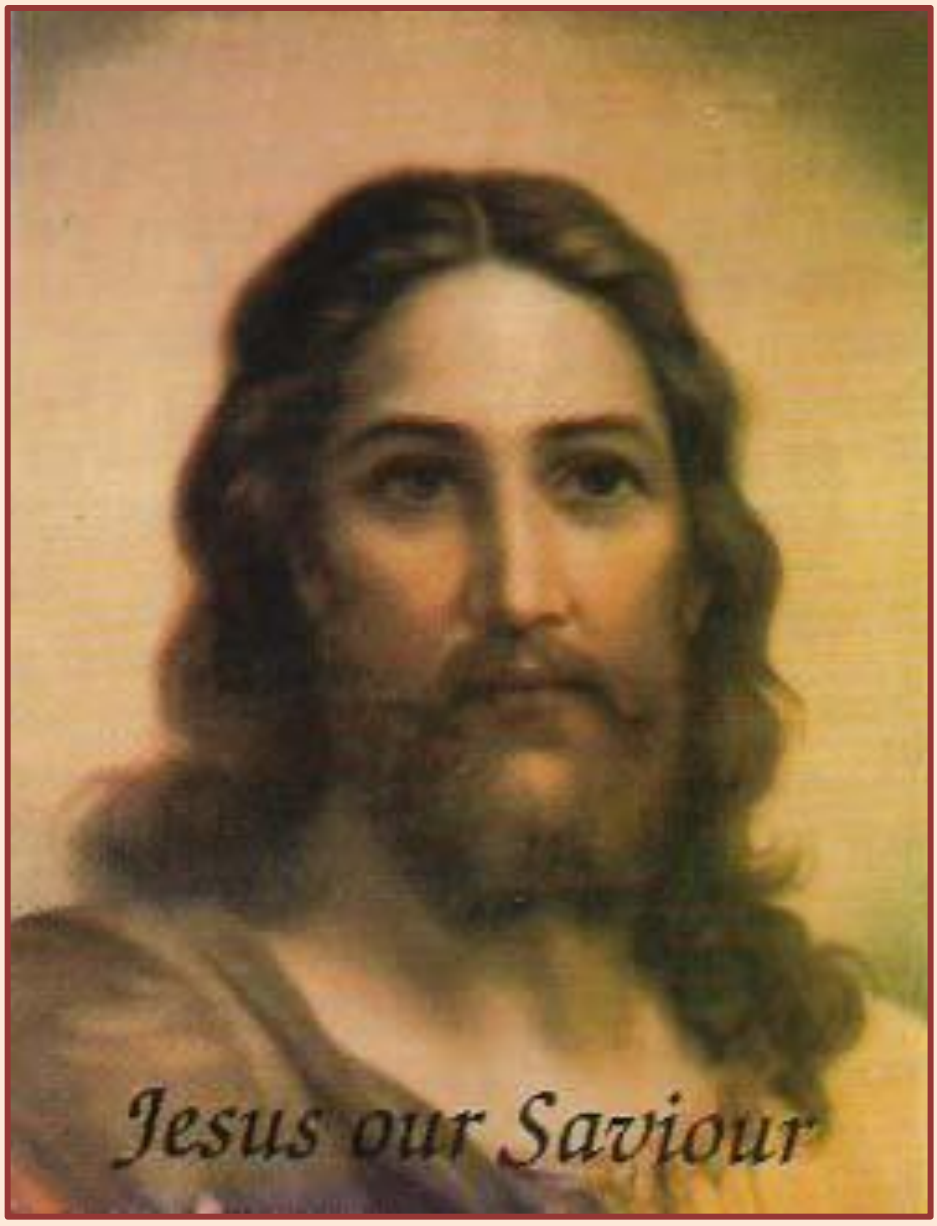


## हमारे उद्धारकर्ता - प्रभु येसु मसीह

स्वामी ज्ञानोदय द्वारा लिखित

‘पूर्णनाय गुरु’

(मलयालम भाषा में प्रकाशित पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है)

# पूर्ण गुरु

अनुवादिका : पुष्पा सी. बालन

संपादक : फादर वर्गीस एन. एस.वी.डी.

प्रकाशक : स्वर्गीय फादर जार्ज पनक्यल,

# विषय – सारिणी


i) स्वामी ज्ञानोदय जी को फादर जार्ज पनक्येल का पत्र

ii) स्वामी ज्ञानोदय जी का उत्तर

iii) समर्पण

iv) प्रस्तावना : 'छुपा हुआ सत्य– कौन है भगवान' ?

1. गुरु पूर्ण है या नहीं ?

2. गुरु की पुकार

3. कहाँ है ईश्वर ?

4. एक विदेश यात्रा

5. कुरान शरीफ की साक्षी

6. महान ग्रन्थ और ईश्वर

7. स्वामी विवेकानन्द और येशु

8. प्रभु येशु और ईसाई धर्म

प्रति,
स्वामी ज्ञानोदय
कन्नूर, केरल

प्रिय स्वामी जी,

12 जनवरी की 'सण्डे शालोम' में आपका 'पूर्ण गुरु' नामक लेख पढ़ने को मिला। उसमें आप ने अपनी भटकती हुई आध्यात्मिक यात्रा के अन्तर्गत ईश्वर की खोज में कैसे येशु को पाया, इस सच्चाई को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया है। यह कोई दर्शनशास्त्र नहीं, बल्कि एक जीवित साक्ष्य है। इस तरह आपने अपने सत्य और ईश्वर की खोज के अन्तर्गत हिन्दु धर्म-ग्रंथ, वेद-उपनिषद्, भगवद्गीता आदि पढ़कर यथार्थ भगवान कौन है, यह बताया है। लेकिन हिन्दु धर्म के सुप्रसिद्ध विचारक स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गाँधी ने येशु को मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार किया था फिर भी सामुदायिक और राष्ट्रीय कारणों की वजह से वे येशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं कर पाए।

नये विधान में प्रस्तुत येशु का जन्म ऐतिहासिक घटना है और 'ईश्वर हमारे साथ' है– इन दोनों सच्चाइयों को भी आपने कई उदाहरणों और अनुभवों द्वारा समझाया है ताकि बुद्धिजीवी भी इसे स्वीकार कर पाएँ। इस तरह के सत्य, नीति और न्याय की प्यासी मानव संतानों को भारत और विश्व भर में देखा जा सकता है। उन सबको यह लेख अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर ले चलने में मदद करेगा। हर मानव की यही इच्छा एवं प्रयास है कि उसे अनन्त जीवन प्राप्त हो। लेकिन मानव मृत्यु की ओर जा रहा है। क्या यही मनुष्य का अनुभव नहीं है? प्रभु येशु ही अनन्त जीवन का मार्ग हैः "पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ। जो मुझ में विश्वास करता है, वह मरने पर भी जीवित रहेगा और जो मुझ में विश्वास करते हुए जीता है, वह कभी नहीं मरेगा।" (योहन 11/25-26) "जो मेरा मांस खाता और मेरा रक्त पीता है, वह मुझ में निवास करता है और मैं उस में" (योहन 6/56) यही प्रभु का कहना है। दूसरी जगह वे कहते हैं "मेरे पिता के यहाँ बहुत से निवास स्थान हैं। यदि ऐसा नहीं होता, तो मैं तुम्हें बता देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए स्थान का प्रबंध करने जाता हूँ। मैं वहाँ जा कर तुम्हारे लिए स्थान का प्रबंध करने के बाद फिर आऊँगा जिससे जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम भी रहो।" (योहन 14/2-3) यही है प्रभु येशु की रक्षा पद्धति या मुक्ति योजना।

मेरे प्रिय दोस्त, अभिनन्दन! आप के इस लेख के द्वारा बहुत सारे लोग, जाति और धर्म के भेद से परे होकर सच्चे ईश्वर को जानेंगे।

दिल्ली धर्मप्रांत में कुछ वर्षों से मैं ख्रीस्तीय विश्वास के बारे में खोज़ करने वाले लोगों को उपदेश एवं मार्गदर्शन देता आ रहा हूँ। मेरा अनुभव है कि बहुत से लोग येसु को अपने धार्मिक गुरु के रूप में स्वीकार कर रहे हैं।

ऐसे सत्य को खोजने वाले लोगों के लिए आपका यह लेख एक सहारा होगा, विशेषतः उत्तर भारत के लोगों के लिए। 'सण्डे शालोम' पत्रिका में प्रकाशित आप का लेख "पूर्ण गुरु" को मलयालम और हिन्दी में प्रकाशित करने की आप मुझे शीघ्र अनुमति दें।

आपको मेरी शुभकामनाएँ। येशु का साक्ष्य देने में पिता ईश्वर आप पर मानसिक धैर्य और सभी अनुग्रहों की वर्षा करें। इसी प्रार्थना के साथ–

सस्नेह!

फा. जॉर्ज पनक्येल,
कैथेड्रल चर्च, गोल डाकखाना,
अशोक प्लेस, नई दिल्ली–110001

आदरणीय फादर पनक्येलजी,

आप का पत्र मिला। आपको सहर्ष धन्यवाद!

मेरा अनुभव और बोध आप के लिए एक अनुग्रह का साधन हो गया है यह जानकर मैं ईश्वर की स्तुति करता हूँ, सभी महत्वों को मैं अपने गुरु को अर्पित कर रहा हूँ। फादर जी, आप की आवश्यकता के अनुसार 'शालोम' पत्रिका में छपे लेख को किसी भी भाषा में प्रकाशित करने की अनुमति आप को मैं दे रहा हूँ। पूरा भारत येसु का आलिंगन करे– यही मेरी इच्छा और प्रार्थना है।

'पूर्ण गुरु' नामक पुस्तक भी प्रकाशित हो गई है। उस की एक प्रति भी इसके साथ मैं भेज रहा हूँ।

फादर जी, मेरे लिए अवश्य प्रार्थना कीजिये। यही मेरी याचना है। धन्यवाद!

सप्रेम येसु में आपका
स्वामी ज्ञानोदय

# प्रस्तावना

## 'छुपा हुआ सत्य – कौन है भगवान ?'

'छुपा हुआ सत्य – कौन है भगवान ?' मेरी इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद दो साल हुए हैं। इस पुस्तक में मैंने लिखा है कि कई सालों की ईश्वर की खोज के फलस्वरूप मैं एक पूर्ण गुरु के पास पहुँच गया हूँ और उनकी वाणी ने मेरे लिए आत्मज्ञान का दरवाज़ा खोल दिया है। पुस्तक को पढ़ने वाले लोगों के मन में पूर्ण गुरु को जानने की जिज्ञासा कुछ समय से हो रही है; फिर भी 'कौन है भगवान', इस कृति को अधिक से अधिक लोगों में फैलाने के लिए मैंने मौन धारण किया। परन्तु 'पूर्ण गुरु' को प्रकाशित करने के लिए कुछ महीनों से मेरा अंतरमन मुझे प्रेरित कर रहा है। इसलिए उस पूर्ण सत्य को उजागर करने में और देर करना उचित नहीं है।

'कौन है भगवान' पुस्तिका में कहा गया है– ईश्वर आत्मा है और असली मन्दिर मानव शरीर है। ऐसा है तो, निराकार और सर्वभूतों की अंतर-आत्मा यानि ईश्वर का दर्शन एक पूर्ण गुरु के द्वारा ही हो सकता है। ईश्वरीय गुण– सत्य, दया, प्रेम, क्षमा, करुणा, त्याग और धैर्य– ये सब एक पूर्ण गुरु में होना चाहिए। ऐसे गुणों वाला व्यक्ति ही साक्षात् ईश्वर के दर्शन हमें करा सकता है। वेदान्त तत्व के अनुसार– 'गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः' अर्थात् 'गुरु ही भगवान है' यह महाकाव्य सबको मालूम होगा। अज्ञानी मनुष्यों द्वारा बनाई जाति-धर्म की संकुचित विचारधारा मन से निकाल दी जाय तो हर व्यक्ति 'मेरा गुरु ईश्वर का प्रतिरूप है' इस सत्य को समझ पायेगा। यही नहीं, वह व्यक्ति एक नया व्यक्ति बन जाएगा। यह कृपा ईश्वर अवश्य सब पर करेंगे। इसी आशा से और प्रार्थना से 'पूर्ण गुरु' को मानव समाज के समक्ष समर्पित कर रहा हूँ।

**स्वामी ज्ञानोदय**

# पूर्ण गुरु

## १. 'गुरु पूर्ण है या नहीं ?

आध्यात्मिक और भौतिक ज्ञान मनुष्य के लिये सिक्के के दो पहलुओं की तरह हैं। फिर भी आध्यात्मिक ज्ञान का ही अधिक महत्व है क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान के बिना भौतिक ज्ञान रेत पर बने मकान जैसा है। आध्यात्मिक ज्ञान का रास्ता दिखाने वाला है 'गुरु', फिर भी कभी-कभी गुरु पूर्ण है या नहीं यह समझना मुश्किल होता है। यदि अपने गुरु पूर्ण और सही नहीं हों तो हम कई अंधविश्वासों में पड़ सकते हैं तथा इस का फल अंधे को अंधे द्वारा रास्ता दिखाए जाने जैसा होगा।

अधिकतर लोग 'गुरु' की योग्यता देखे बिना केवल उनकी वेशभूषा के मायाजाल और बड़े-बड़े शब्दों को सुनकर अथवा उनके भौतिक दानों से प्रभावित होकर, उन्हें गुरु बना लेते हैं। कुछ लोग अपने आपको जगत्गुरु, सत्गुरु और देवी-देवताओं के रूप में व्यक्त कर लेते हैं। इसके फलस्वरूप आध्यात्मिकता के बदले समाज में, मूर्तिपूजा, व्यक्तिपूजा, मंत्र और तंत्र द्वारा, अंधविश्वास फलने-फूलने लगता है। ग्रहों के दोष मिटाने वाले भी बहुत हैं। मनुष्य के दुःख मिटाने में वे लोग नाकाम हैं इसलिए उन्हें ग्रहों के ऊपर डाल कर वे लोग बच जाते हैं। आत्मज्ञान का रास्ता दिखाने वाले तो हैं न सत्गुरु? ऐसा है तो उस व्यक्ति को आत्म- ज्ञान प्राप्त होना चाहिए; अर्थात् आत्मा क्या है, कहाँ रहता है इन सब का अनुभव स्वयं करना चाहिए और इस महान सत्य को अपने जीवन में भी लागू करना चाहिए। उसके आध्यात्मिक और भौतिक जीवन में कोई दोष नहीं होना चाहिए। ऐसे एक व्यक्ति को ही पूर्ण गुरु संबोधित किया जा सकता है। ऐसा एक गुरु किसी को मिल गया तो पहले उसे अपने गुरु के उपदेशों का पालन करने की मानसिक अवस्था बनानी पड़ेगी। इस प्रकार उस व्यक्ति के लिए रक्षा या उद्धार का मार्ग खुल जायेगा।

पूर्ण गुरु कैसे मिलेंगे ? इस के लिए ईश्वर का अनुग्रह चाहिए। पूर्ण गुरु को कैसे पहचानेंगे ? यदि ऐसे सवाल हैं तो उस व्यक्ति की आत्मा के फल प्रेम, सत्य, क्षमा, करुणा, त्याग, सिद्धी आदि दुःखी और पीड़ित लोगों की ओर बहते रहेंगे। वह आत्मा के हित के विपरीत लोगों को तृप्त करने हेतु कुछ नहीं करता। वह व्यक्ति पूजा, मूर्तिपूजा, मंत्र-तंत्र में किसी को प्रोत्साहित नहीं करेगा, क्योंकि उसको मालूम हो गया है कि मूर्तियों की पूजा अर्चना बेकार है। आत्म-ज्ञान प्राप्त कुछ लोग कभी-कभी गलती से सोचते हैं कि लोगों की इच्छा के अनुसार ही उन का उद्धार किया जाए।

आत्म-ज्ञान प्राप्त 'गुरु' निडर व पाप रहित होंगे। यह एक अहम् बात है, क्योंकि एक पाप रहित व्यक्ति ही दूसरों को उपदेश दे सकता है कि व पाप न करें। यूं देखें तो दुनिया में ऐसा एक ही पूर्ण गुरु हैं जो **दुनिया से कभी नहीं डरते थे तथा दुनिया की मोह-माया में नहीं पड़ते थे। हर समय ईश्वर का कार्य करके उसके रास्ते पर चलते थे। इसलिए उन से कभी कोई गलती नहीं हुई। वो है प्रभु 'येसु मसीह'।** ''जिसने मुझे देखा, उसने ईश्वर को देखा है, मैं और पिता एक हैं'' उनका ये वचन पूर्ण सत्य है उनके जीवन को परखें तो सबको पता चलेगा। मैं कहता हूँ, यदि कोई निराकार परमात्मा को मनुष्य रूप में देखना चाहे या ईश्वर मनुष्य रूप में अवतरित हुआ– ऐसे विश्वास करे तो उसे येसु के चरणों पर शरण लेना ही एकमात्र मार्ग है। यदि किसी को लगता है कि एक ही मार्ग लेना संकुचित मनोभाव है तो उसका यह जवाब है कि अँधेरे में रोशनी देने के लिए कई तरह के बल्ब उपलब्ध हैं। ये सब अंधेरे में प्रकाश देते हैं, फिर भी पूर्ण रूप से कभी-कभी उनसे रास्ता दिखाई नहीं देता। इन बल्बों की रोशनी विभिन्न प्रकार की है। इन्हीं के बीच

जब सूरज निकलता है तो इन बल्बों की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती। पूर्ण और अपूर्ण गुरुओं में यही अन्तर है। इसलिए कम रोशनी में, मुश्किल से चलने से उज्ज्वल रोशनी में सबकुछ देखकर चलना अच्छा है। उस प्रकाश में पूरा रास्ता साफ नज़र आएगा और उस समय रास्ते में कोई काँटे हों या साँप हों– सब ठीक से नज़र आएँगे। ऐसी जानकारी आने वाली विपत्ति को दूर करेगी; यही नहीं, पीछे आने वालों को सूचना भी दी जा सकेगी। येसु मसीह पूर्ण है, ईश्वर में जो गुण हम देखना चाहते हैं वो सारे गुण येसु में हैं। येसु ने कहा, ''मैं इस दुनिया की ज्योति हूँ।'' ''केवल मेरे द्वारा ही सब लोग परम पिता के पास पहुँचते हैं।'' मेरा निजी अनुभव भी यही है कि येसु ही सही मार्ग है, उस मार्ग पर चलें तो आत्मा की रक्षा होगी या मोक्ष मिलेगा। **एक पूर्ण गुरु ही हमें पूर्णता दे सकता है। येसु ने अपनी पूर्णता अपने कर्मों के द्वारा दुनिया को दिखाई।** क्रूस पर पीड़ा सहकर, मरते समय पीड़ा देने वालों के लिए भी उन्होंने पिता ईश्वर से प्रार्थना की, ''हे पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।'' इस प्रार्थना में वो पूर्णता साफ नज़र आ रही है। इस पूर्ण सत्य को पहचानने से इन्कार करने का या उस पूर्ण गुरु को अस्वीकार करने का कारण यह है कि पिता ईश्वर की कृपा उन पर नहीं है। येसु ने कहा, ''मेरे पिता की कृपा के बिना कोई मेरे पास नहीं आ सकता''। इस वाक्य का अर्थ है कि दुनिया में बहुत लोग अभी भी उनका रास्ता अपनाने में वैमनस्य दिखाते हैं, इसलिए पूर्ण गुरु को मिलने के लिए ईश्वर से पूर्ण हृदय से प्रार्थना करनी होगी–जो खटखटाते हैं, उन के लिए दरवाज़ा खुलेगा, जो खोजते हैं वे ही पायेंगे'', –यही ईश्वर के वचन हैं।

## २. गुरु की पुकार

बचपन्न से ही मैं एक ईश्वर भक्त और ईश्वरान्वेषक रहा। मैं क्यों ईश्वर को खोजता रहा, इसके कई कारण हैं, उनमें से एक है मेरी छोटी बहन, जिसे मैं बहुत प्यार करता था। उसके साथ खेलना और समय बिताना ही मेरा मुख्य मनोरंजन था। उसका रोना, उसका हँसना, सब मुझे बहुत आकर्षित करता था। दुर्भाग्यवश दो साल की मेरी प्यारी छोटी बहन के शरीर में किसी प्रकार ज़हर चला गया और वह इस दुनिया से चली गई। उसकी मृत्यु ने मुझे बहुत दुःख पहुँचाया। मुझे दुःखी देखकर मेरी माँ ने कहा–''हमारी गुड़िया को ईश्वर स्वर्ग ले गया है, बड़ी हो कर वापस आएगी।'' दूसरी कक्षा में पढ़ने वाले बालक, मैं ने माँ की बात का विश्वास कर लिया। ईश्वर को खोजकर अपनी बहन को वापस लाना है, यह मेरी चिंता थी। थोड़ा और बड़ा होने पर मुझे पता चला कि मरे हुए कभी वापस नहीं आते। उस बच्ची को जहाँ दफ़नाया गया था उस जगह को देखकर उस दिन मैं बहुत रोया। आठवीं कक्षा में पढ़ते समय 'ईश्वर कौन है?' यह सवाल मेरे मन में उठा। कारण यह था कि मेरे गणित का अध्यापक एक अच्छा ईश्वर-भक्त था। उसने बताया कि इस सारे प्रपंच और इस सृष्टि की रचना ईश्वर ने की और हम सब का भी पालन वो ही कर रहा है। अध्यापक के इस वाक्य ने मुझे आकर्षित किया। उसी समय मेरे अन्दर एक और सवाल उठा ''ये येसु ख्रीस्त (मसीह) हैं कौन?'' चूँकि श्री कृष्ण और श्री राम की कई अद्भुत कहानियाँ सुनकर और पढ़कर मैं बड़ा हुआ था, ऐसे में मुझे बहुत शंका और जिज्ञासा हुई कि इतिहास में हर जगह बी.सी. (B.C. = Before Christ) और ए. डी. (A.D. = After Christ) लिखा है–ऐसा क्यों लिखा है। 'कृष्ण से पहले' और कृष्ण के बाद' यूं लिखा जाना चाहिए था; 'ख्रीस्त' क्यों? वो भारतीय भी नहीं। ऐसी बातों पर मैं विचार करते रहता।

स्कूल में पढ़ते समय एक बार बाइबिल मिली। उसे पढ़ने की सोचा तो साथियों ने कहा–''इस को मत पढ़ना तुम भी ईसाई बन जाओगे।'' जब घर लेकर आया तो घरवाले बोले ''इसे नहीं पढ़ना, ईसाई लोग हिन्दुओं को ईसाई बनाने की कोशिश में हैं।'' ये सब सुनकर मेरे अन्दर एक ज्वाला भड़क उठी–'अच्छा,

हिन्दुओं को ईसाई बना रहे हैं'। पलभर में बाइबिल के सारे कागज़ों ने रॉकेट, नाव और हवाई जहाज़ का रूप ले लिया।

स्कूल की पढ़ाई के बाद भी बहुदेवाराधना व मूर्तिपूजा से भक्ति के मार्ग में उसी ईश्वर की खोज मैंने जारी रखी। कई मंदिरों में पूजा की एवं तीर्थ यात्रा की। उस समय एक निराशा मन में हुई कि मैं एक ब्राह्मण क्यों नहीं हुआ। इन लोगों का कितना भाग्य है कि ईश्वर के निकट बैठकर पूजा कर रहे हैं। 'अगले जन्म में मुझे भी एक ब्राह्मण बना देना'—मैंने भगवान से प्रार्थना की। कई वर्ष यूं ही निकल गए। मेरे मन में एक और संदेह हुआ— मनुष्य दुर्भाग्य से अलग-अलग रीति से आराधना करते हैं, फिर भी किसी को शांति नहीं मिलती। उनकी पीड़ाएँ कभी खत्म नहीं होती बल्कि बढ़ रही हैं, ऐसा क्यों? छोटी-छोटी बातों को लेकर झगड़े, भाई-भाई में लड़ाई, अलग-अलग धर्म को लेकर झगड़ा। लोग एक दूसरे को मारकर खून बहा रहे हैं। पूरी दुनिया में अशांति है, क्यों? ये सब ऐसा क्यों होता है? मनुष्य इतनी आराधना कर रहे हैं तो भगवान क्यों खुश नहीं होते? 33 करोड़ देवी-देवता होने पर भी कोई मनुष्य को बचा नहीं पा रहा है। मंदिरों के रास्ते रोगियों, अपंगों, अंधों और गरीबों से भरे पड़े हैं। इन बेचारों की रक्षा करने के लिए कोई भगवान नहीं है?—'ये सब भगवान क्यों नहीं देख रहा है', मेरा दिमाग सवालों से भर गया। मंदिरों में अकेले बैठकर सोचता रहा—'क्या ईश्वर नहीं है? क्या मेरी इस खोज का कोई फायदा नहीं? अंत में, मैंने सोचा ये मनुष्य जो आराधना कर रहे हैं वो सही नहीं होंगे, इसलिए ईश्वर खुश नहीं हो रहा है। ऐसे संदर्भ में कभी एक डाकिया पत्र लेकर आता है या कोई न कोई व्यक्ति एक कागज़ मुझे देता—''येशु एक मात्र रक्षक''। तब मुझे बहुत गुस्सा आता था, 33 करोड़ देवी-देवता हैं, इतने भगवान हैं वो कुछ नहीं कर पा रहे हैं तो येशु क्या है और क्या करेगा? इन लोगों को और कोई काम नहीं है? यह सोचकर मैं उन सारे कागज़ों को फेंक देता था।

## ३. कहाँ है ईश्वर?

कॉलेज की पढ़ाई अधुरी छोड़ कर मैंने भारत में बनने वाली एक ''विदेशी'' शराब के 'सेल्समैन' की नौकरी कर ली। शराब मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं थी और शराबियों से मुझे बहुत नफ़रत थी, फिर भी पैसों के लिए ये सब करना पड़ा। इस नौकरी में मेरा दिल नहीं लगता था। इस तरह कई कम्पनियाँ छोड़ी। मैं कोई काम नहीं कर पा रहा था। दिल में यही सवाल उठते थे कि ईश्वर है तो कहाँ है? सारे काम मैं भूल जाता था—सुबह दाँत साफ करते वक्त भी ब्रश मुँह में रखे सोचता था, कभी नहाने के लिए कुएँ से पानी निकालने वक्त भी ऐसा ही खड़ा होकर सोचता रहता था। मुझे यों मूर्ति की तरह खड़े देखकर बहुत बार माँ पूछती ''तू क्या कर रहा है? कभी मेरी ममेरी बहन पूछती ''तुम क्या सोच रहे हो? मुझे हँसी आ जाती, मैं क्या जवाब दूँ। ईश्वर है या नहीं? है तो कहाँ है? यही सोचता रहता। इस प्रकार काम पर जाने के लिए रोज देर हो जाती। घर से निकलता तो दूर किसी मंदिर में जा कर बैठ जाता। इस वजह से मेरे रिश्तेदार मुझे 'कामचोर' कहने लगे। जीवन यात्रा में दुःख बढ़ रहा था। ऐसे में एक ज्योतिषी के पास गया। उसने गणना कर के बताया तुम्हें बहुत ऊँचा पद प्राप्त होगा, लेकिन अभी कुछ महीनों से और आगे कुछ महीनों तक शनि पीड़ा देता रहेगा; लेकिन घबराना नहीं। इस के बाद बुध की दशा है; फिर शुक्र की दशा है। समय दोष निवारण के लिए नाग- मंदिर में अपने परिवार सहित सर्प बलि दो, उसी दिन भगवती-मंदिर में नारियल पूजा, गणपति के लिए दूबघास हवन और शिव के लिए तिल का तेल। इन सब के लिए ज्योतिषी ने एक बड़ी सूची दी। ये सब मैं ने बहुत भक्ति और आदर के साथ पूर्ण किया। लेकिन महीनों और सालों के बाद भी कोई शुक्र या बुध उठते नहीं दिखा। इसके बाद मैं एक अन्य प्रसिद्ध ज्योतिषी के पास गया। वे भी पहले ज्योतिषी के समान बोलने लगे ''ईश्वर की कृपा तुम पर है, बहुत ऊँचा पद प्राप्त होगा, परन्तु अभी राहू चल रहा है, बहुत ख्याल रखना है, जल, अग्नि, और विष से हानि पहुँचने का भय है। रात को यात्रा मत करना। दोष निवारण के लिए नाग मंदिर में अंडा और नागमूर्ति रखनी है, उनकी पूजा करनी है और

घर की उत्तर दिशा के मंदिर में नारियल, तेल और पाँच रुपये चढ़ाने हैं तथा शिव की आराधना करनी है। ज्योतिषी के पास से निकलते समय मैं सोचने लगा, उन्होंने कहा था कि ईश्वर की बहुत कृपा है। ऐसा है तो राहु कैसे आक्रमण कर सकता है, ईश्वर और राहु दोनों में कौन शक्तिशाली है? सोचने पर कहीं कोई जवाब नहीं मिला। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। फिर भी जैसा ज्योतिषी ने कहा वैसा ही किया। सोचा यदि ऐसा नहीं किया तो कहीं राहु का प्रकोप न हो जाए।

कोई न कोई मंदिर जाने पर बहुत घबराहट सी होती थी। कारण यह था कि वहाँ कई तरह के देवी देवताओं की मुर्तियाँ होती थीं। पहले किसे प्रणाम करूँ? पहले दाएँ जाना है या बाएँ। एक के पास ज्यादा समय बिताऊँ तो दूसरा रूठ न जाए। चंदन लेप करना है या भस्म लगाना है। इस प्रकार की कई समस्याएँ, फिर भी क्या करें, सब कुछ कर लेते।

इस तरह चंदन, भस्म, तुलसी, सब कुछ लगा कर वापस आने का वो दृश्य देखने लायक था। ज्योतिषी के कहने के अनुसार सब करने के बाद भी राहु छोड़ेगा तो केतू पकड़ेगा। इस तरह पूजा और कई गतिविधियाँ करके समय निकल चुका था। बस, ईश्वर कौन है, कहाँ है? इसका कोई जवाब नहीं मिला। काम से कुछ पैसा आने लगा तो मुझ में कुछ अहंकार आने लगा। धीरे-धीरे कई बुराइयों में गिरने लगा और भक्ति एक नाटक जैसी होने लगी। परन्तु कुछ समय के भीतर पापों का भयंकर फल प्राप्त होने लगा। मुझे पता चला कि पैसा और जो भौतिक आनन्द मुझे मिले हैं वो सब मेरे लक्ष्य में बाधा डालने वाली माया है। इसलिए मैं ने मन को पहले से अधिक शक्ति से भक्ति की ओर मोड़ा और यूं प्रार्थना की ''हे भगवान, कभी सपने में ही सही–दर्शन दो''। फिर से भक्ति सिर पर सवार हो गई और भौतिक जीवन से बैराग्य होने लगा। सब काम छोड़ कर मैं रोज किसी दूर के मंदिर में जाकर बैठने लगा। इस प्रकार काम भी छुट गया। माँ बहुत नाराज़ हुई और डाँटने लगी, ''तुम पच्चीस साल के हो गये हो, अभी लगातार मंदिर जाना बन्द करो।'' फिर भी मैं अनसुना करता ही रहा।

इस तरह खोजते-खोजते समय बीत गया। **इसी दौरान सफेद चोगा धारण किए एक बहुत तेजस्वी पुरुष के मुझे दर्शन हुए। उन्होंने मुझ से बोला 'बेटा, तुम मेरे साथ आ जाओ'। उन्होंने यह वाक्य कई बार दोहराया।** मैं ने माँ को यह बात बताई। माँ मुझे डाँटने लगी ''तुम काम करना नहीं चाहते हो इसलिए कुछ न कुछ बोलते हो।'' मुझे भविष्य की कई घटनाओं का पूर्वाभास होने लगा और वो वैसे ही घटने लगीं। माँ मुझसे बोली ''तुम मुँह बंद रखो, यही अच्छा है।'पहले मैं माँ को पूर्वाभासों के बारे में बता देता था, फिर मैंने वो सब बताना बन्द कर दिया। मैं मंदिर हर रोज जाता था इसलिए वहाँ के पुजारी से अच्छी दोस्ती हो गई। फिर मैं मंदिर के बंद होने के बाद ही घर लौटने लगा। पूरी तरह भौतिक इच्छाएँ व भौतिक जीवन त्यागने का मन होने लगा। 'ऊपर आकाश नीचे ज़मीन', इस तरह का मेरा व्यवहार देख कर माँ ने दुःखी हो कर मुझे बहुत समझाया। परन्तु कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। मैं ने माँ से कहा ''मेरा यह जन्म ऐसे ही जाने दो, माँ।'' माँ गुस्से से चिल्लाने लगी ''तुम अपनी जिम्मेदारी निभाना नहीं चाहते हो।''

एक दिन उसी पुजारी ने अपनी एक बीमारी के बारे में मुझे बताया, कि उसने कई डाक्टरों को दिखाया; कोई फायदा नहीं हुआ। मैं ने उन से कहा ''भगवान शिव से कहो, ईश्वर के लिए कोई कार्य असाध्य नहीं हैं, क्यों डाक्टरों को दिखा रहे हो?'' उस समय उनका जवाब सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। वे बोले 'जितना पैसा इधर से मिल रहा है वह एक समय के भोजन के लिए काफी नहीं, फिर तो रोग कैसे ठीक करा सकता है।'' मैं ने पूछा ''इसका मतलब– ये सारी पूजा व्यर्थ है, ईश्वर कभी खुश नहीं होता?

पुजारी ने मेरा भोलापन देख कर कहा ''शायद हो सकता है!'' वापस घर आते समय मैं ने सोचा–शिवलिंग की अपने हाथों से पूजा करने वाले ब्राह्मण की यह हालत है तो अन्य भक्तों की स्थिति क्या होगी? घर जा कर मैं सोने लगा तो नींद नहीं आ रही थी। मेरा इतना समय व्यर्थ हो गया क्या? भगवान

नहीं है? समस्याओं से मन अशांत होने लगा। लेकिन, ये प्रकृति, ये ब्रह्माण्ड किस ने बनाया? अगर ऐसी कोई शक्ति नहीं है तो ये सब कैसे चल रहे हैं? अंदरमन से आवाज आई ''नहीं ईश्वर है।'' लेकिन कहाँ है? उसी का जवाब नहीं।

उस ब्राह्मण पुजारी से भगवान प्रसन्न नहीं हो रहा है तो क्या किसी स्वामी से हो सकता है? मैं यूँ विचार करने लगा, और इधर-उधर स्वामी सन्यासियों के प्रवचन सुनने लगा। लेकिन कई प्रवचनों को सुन कर पता चला, मेरे सवाल का जवाब कहीं नहीं मिल रहा है। क्योंकि वे पंडित तो हैं परन्तु अनुभवी नहीं हैं। इसलिये उन की शिक्षा को मैं स्वीकार नहीं कर पाया। कई स्वामियों के चरणों की सेवा की और स्वयं एक आश्रम में जा कर एक स्वामी बनने के लिए 'स्वामी चिदानन्दपुरी' से मिलकर उन्हीं के 'कुलात्तूर आश्रम' में रहने की बात की। उन्होंने दो हफ्ते के बाद आने के लिए कहा। मैं सब कुछ छोड़ कर आश्रम जाने की तैयारी करने लगा।

## ४. एक विदेश यात्रा

आश्रम जाने की तैयारी के समय से एक साल पहले अपने लिए एक 'विज़ा' के लिए मैं ने एक परिचित व्यक्ति से बात की। उस व्यक्ति ने एक 'वीज़िटिंग वीजा' मुझे भेज दिया। मैंने माँ से कहा 'मैं जाना नहीं चाहता' तो माँ ने बहुत गुस्सा किया, वे बोली– ''तुम्हारे पिताजी इस उम्र में भी जो कमा के लाते हैं तुम उसे खा कर बैठ जाते हो। तुम्हें पालने के बदले नारियल का पेड़ उगाया होता तो वही इस से अच्छा होता।'' माँ के दुःखों का कोई अंत नहीं था। इसलिए मैं ने माँ की जोर जबरदस्ती से विदेश जाने की सोचने लगा। **उस दिन फिर उसी तेजस्वी पुरुष ने मुझे दर्शन देकर बताया ''विदेश मत जाना, कुछ नहीं मिलने वाला है''।** यह बात मैंने माँ को बताई तो वह गुस्से से चिल्लाने लगी और मुझे एक ज्योतिषी के पास ले गई। सब कुछ देख कर उसने कहा ''समय अच्छा है, जहाँ भी जायेगा सफल होगा।'' कौड़ियाँ निकाल कर फिर बोला ''बहुत पैसेवाला बनेगा। विदेश यात्रा भी दिख रही है।'' ये सुनकर माँ बहुत खुश हो गई। उसने मुझे आज्ञा दी ''जल्दी से जाने की तैयारी करो और कुछ मत सोचना। अच्छा समय आने वाला है।''

खाड़ी जाने की तैयारी में बाकी दिन बीते। पिताजी ने मेरे टिकट के लिए पैसों का इंतज़ाम कर लिया। जाने से पहले मंदिर के पुजारी के निर्देशानुसार मृत्युँजय हवन, गणपति हवन, मामानम मंदिर में नारियल पूजा, रक्तपुष्पाँजलि, नाग मंदिर के सर्प बलि व समर्पण और कई अन्य अनुष्ठान किए। माँ की ओर से एक विशेष प्रार्थना भी की गई; और पहली आय से घर में एक और पूजा करने की मन्नत ली गई।

रिश्तेदारों और दोस्तों से विदा लेकर मैं विदेश पहुँचा वहाँ एक सप्ताह के अन्दर ही मुझे अच्छा लगा। जल्दी से जल्दी एक नौकरी और सुख से वहाँ जीने की तमन्ना लेकर प्रार्थना की। घर से अपने साथ लाये शिव और पार्वती की एक फोटो मैंने मेज़ पर प्रतिष्ठित की। फिर एक दीप जला कर प्रार्थना करने लगा। मेरे साथी मुझे स्वामी कह कर पुकारने लगे। कुछ दिनों के बाद मंदिर न जाने से मन अशांत होने लगा। वहाँ से ढाई सौ किलोमीटर दूर एक गणपति मंदिर है। मैं ने वहाँ जा कर रो रोकर प्रार्थना की। दो महिने बीत गए। कोई नौकरी नहीं मिली। बहुत दुःखी होकर फिर उस मंदिर में जा कर मैंने प्रार्थना की। जिस आदमी ने मुझे 'खाड़ी' में बुलाया था, एक दिन उसने मुझे बताया कि अगले हफ्ते तुम्हें 'नोकरी का वीज़ा' मिल जाएगा। मुझे बहुत खुशी हुई। मैं ने फिर मंदिर जा कर प्रार्थना की। जिस दिन उस व्यक्ति ने मुझे यह खुशखबरी सुनाई उसके अगले दिन एक नया समाचार सुनने को मिला। सुल्तान काबुस ने फैसला किया है कि तीन महीने तक कोई नया 'वीज़ा' नहीं दिया जाएगा। मेरा 'वीज़िटिंग वीज़ा' का समय उसी हफ्ते खत्म हो जायेगा, क्या किया जाय! दुःखी मन से वापस जाने के दिन गिनता रहा। आखिर मैं चाचा के घर से वापस केरल आने के लिए हवाई अड्डे की ओर यात्रा कर रहा था। उस पाँच सौ कि.मी. की यात्रा में मुझे पुराने दिनों की याद आई। मैं ने सोचा इतना समय ईश्वर की खोज में बिताया तो क्या फायदा; 'कोई ईश्वर

नहीं है'। जीवनभर जो पूजा की और ईश्वर की खोज की, सब व्यर्थ हुई। काम ढूँढते-ढूँढते भी थक गया हूँ। निराश मन ही बाकी है!

केरल पहुँच कर निश्चय किया कि अब कभी मंदिर के दरवाजे तक भी नहीं जाऊँगा। ये सब सोचते हुए बस में यात्रा करते हुए एक घंटे की यात्रा की होगी तो एक आदमी बस में चढ़ा और मेरे पास आ कर बैठ गया। वह भी एक मलयाली था। इसलिए जान-पहचान जल्दी हो गई। मैंने अपना सारा हाल उसे बताया। उसने कहा ''भाई, तुम्हारे लिए भी ईश्वर की कोई योजना होगी'' ऐसा कह कर उसने एक पर्चा दिया। फिर से ईश्वर का नाम और वह पर्चा देखकर मैं गुस्से से काँपने लगा। मैंने गुस्से से उसके सामने उस पर्चे को फेंक कर कहा ''कोई ईश्वर नहीं, कुछ भी नहीं''। वो आदमी फिर भी शांत आवाज में बोला ''भाई, तुमने येशु मसीह को अभी तक नहीं जाना; इसलिए यह हालत हो रही है। येशु को जानो वो ही तुम्हारा मसीह है।'' इतनी पूजा और इतने भगवान! कोई भी रक्षक नहीं, अब इस की कमी थी। आगे एक शब्द भी ईश्वर के बारे में मत बोलना! मेरे मुँह से गालियाँ निकलने लगी। यदि बस में बैठा नहीं होता तो उसे एक थप्पड़ लगा देता; इतना गुस्सा आया। भगवान की योजना है! मेरे विनाश की योजना और उनको कुछ नहीं आता। वो आदमी फिर भी शांति से एक मुस्कान के साथ बोला ''दुःखी मत हो, येशु को जानो।''

केरल लौटने पर सब लोगों ने यह कहते हुए मेरा उपहास किया– 'यह कभी ठीक नहीं हो सकता, यह अभागा है।' माँ बाप दुःखी हो गये। मैंने सोचा– अब क्या किया जाए? कहाँ से शुरू किया जाए? बहुत बड़ी चुनौती थी। फिर भी मैंने कार चलाना सीखा और एक नौकरी प्राप्त कर ली। परन्तु बहुत कम पैसा मिल रहा था। इसलिए पुराने दोस्तों के साथ शराब के अड्डे में काम ले लिया। वहाँ भी कुछ मुश्किलें आई, तो उस काम को भी छोड़ना पड़ा। मानसिक पीड़ाओं के साथ-साथ घर की कुछ समस्याएँ भी आ गई। इन सबके कारण झूठे रिश्ते-नातों का पता चला और जीने की इच्छा खत्म हो गई। इतने अच्छे भक्त को इतने सारे दुःख और समस्याएँ! अब आगे जाने से क्या लाभ है? जीना है या नहीं? पागलों जैसी मानसिक अवस्था में कैसे पहुँच गया, किसने पहुँचा दिया? जैसे भी हो मैं एक येशु-भक्त के पास जा पहुँचा।

मेरे मुख से मेरे मन की पीड़ा जानकर उन्होंने मुझ से कहा– 'ईश्वर तुम से प्रेम कर रहा है।' मुझे कोई फर्क नहीं पड़ा। मैं निर्विकार था। उन्होंने ख्रीस्त-वेद पुस्तक (बाइबिल) खोलकर कुछ वचन सुनाए– **'तुम्हें जन्म देने वाली माँ तुम्हें छोड़ सकती है, परन्तु मैं तुम्हें कभी नहीं छोडूँगा। घबराना नहीं, मैं तुम्हारे साथ हूँ।' उस समय ऐसा लगा, मानों ईश्वर सच में मेरी व्यथा देखकर मुझ से बात कर रहा है। मेरे चेहरे पर नई उमंग आने लगी। उस दोस्त ने मुझे आत्म-ज्ञान पाने के कुछ उपाय बताए। उन्होंने कहा– बीती हुई सारी घटनाओं के लिए ईश्वर को धन्यवाद देना और येशु मसीह पर विश्वास करके, किये हुए सारे पापों के लिए प्रायश्चित करके माँफी माँगना।** एक छोटे बच्चे की तरह मैंने उनकी बातें सुनी और जैसा उन्होंने कहा वैसा ही किया। हृदय में जितने घाव थे सब आँसुओं में डूब गए। घंटो की आँसू भरी प्रार्थना के अंत में मुझे ऐसा महसूस होने लगा जैसे मेरे पूरे शरीर में बिजली की तरंगें आ कर आग जैसी गर्म चीज़ मेरे भीतर भर रही है। मेरे सिर के चारों तरफ एक प्रकाश घूमने लगा। ऊँगलियाँ स्पर्श की जाएँ तो उनमें चुम्बकीय शक्ति। थोड़ी देर बाद किसी की आवाज कानों में गूँजने लगी और मेरा सिर आध्यात्मिक ज्ञान से भरने लगा।

मैं आश्चर्यचकित हो गया वह आवाज़ किस की है? मैं पागल तो नहीं हो रहा हूँ? घर पहुँचने पर भी ये सब जारी रहा। फिर मैंने समुंद्र के किनारे जाकर घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना की ''हे ईश्वर मुझे छोड़ना नहीं'' मैंने आँखें बंद करके, सब कुछ भुला दिया। लहरों का शोर तक मुझे सुनाई नहीं दे रहा था। मैं इस तरह ईश्वर में खो कर प्रार्थना करने लगा तो आवाज स्पष्ट सुनाई देने लगी– **''पुत्र मैं हूँ तेरा ईश्वर। मैं तेरे हृदय में रहता हूँ।''** आश्चर्यचकित होकर मैं स्तब्ध रह गया। ''जीवन भर मैं जिसे खोजता रहा वही ईश्वर मेरे भीतर है!'' जीवन में इतनी शांति मुझे कभी नहीं मिली। **''हाँ, मैं सब के हृदय में रहने वाला**

**आत्मा हूँ, जिन का हृदय शुद्ध है वे मुझे पहचानेंगे।"** इतने समय से यह सत्य मेरी समझ में क्यों नहीं आया। यह सत्य मुझ से दूर क्यों था? ये विचार मन में आया तो सामने एक और सत्य प्रकट हुआ– "शरीर एक मंदिर है।" फिर भी इस दुनिया की मोहमाया में उलझ कर इस सत्य को जाने बिना मैं चल रहा था। इस मोहमाया से बचना है तो एक पूर्ण गुरु की जरूरत है। ईश्वर इतना दयावान है कि उसने हमें 'ईसा (येशु) मसीह' को पूर्ण गुरु के रूप में दिया। येशु ने कहा है कि "जिस ने मुझे देखा है, उसने ईश्वर को देखा है (योहन 14/9)। "मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ। मुझ से होकर गये बिना कोई पिता के पास नहीं आ सकता (योहन 14/6)" ये वचन जीवन में पहले भी कई बार मेरे सामने आये थे, छोटे पर्चों पर लिखे संदेशों के रूप में। परन्तु मैं उन्हें फेंकता रहा। उस दिन मुझे लगा कि ईश्वर ने मुझे बार-बार अवसर दिए और मैंने संकुचित विचारों के कारण इतना समय बेकार गंवा दिया। मेरे मन में येसु का सुसमाचार (बाइबिल) पढ़ने की इच्छा होने लगी।

अपने जीवन में येशु में विश्वास करने के बाद आए परिवर्तन के बारे में मैंने एक पड़ोसी को बताया और बाइबिल पढ़ने की इच्छा प्रकट की तो उसकी पत्नी बोली कि उनके पास बाइबिल है। इस प्रकार एक हिन्दु बहन के द्वारा ईश्वर ने मुझे बाइबिल पढ़ने को दी। बाइबिल हाथ में आते ही उसे पूरा पढ़ने का मन था। परन्तु क्या करता वहाँ बिजली नहीं थी। इतने में एक आदमी जो उस रास्ते से जा रहा था, एक मोमबत्ती मेरे सामने रखकर बोला, "इसे यहाँ रहने दो, आगे मैं रोशनी के बिना जाऊँगा।" ऐसा कहकर वह चला गया। सच कहूँ तो मैं आश्चर्यचकित हो गया। भक्ति के साथ बाइबिल, उसी रोशनी में पढ़ने लगा।

येसु के वचनों को पढ़कर मेरे मन में पहली बार अत्यधिक आनन्द का अनुभव हुआ। वे हृदय को छूते हुए अंतर मन की गहराई तक पहुँच रहे थे। ईश्वर स्वयं मुझ से बात कर रहा था। कुछ अध्यायों के बाद मैं अपने आप से खुशी से कहने लगा– 'देख, ईश्वर एक गुरु के रूप में, येशु मसीह में जन्म लिया है।'

उसके साथ ही दूसरा एक सत्य का भी मुझे पता चला कि **येशु किसी जाति या धर्म को बनाने वाला नहीं है, लेकिन वह ईश्वर के धर्म को ही दुनिया में प्रकट करने आया है:** क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूँ? मैं जो शिक्षा देता हूँ, वह मेरी अपनी शिक्षा नहीं है। मुझ में निवास करने वाला पिता मेरे द्वारा अपने महान् कार्य सम्पन्न करता है। (योहन 14/10) मैं प्रार्थना के साथ 'मत्ती का अध्याय' आगे पढ़ने लगा। पढ़ने के बाद, येशु मसीह कौन है? ईसाई कौन है?– ये सब बातें परमात्मा ने मुझे समझायी। वर्षों पहले येसु ने मुझे कई बार बुलाया था। परन्तु मैं उसे ठुकराता रहा। ईश्वर ने मुझे देखने की शक्ति दी थी, परन्तु मैं बाइबिल पढ़े बिना दूसरों की सुनकर छोटे पर्चों पर लिखे येशु के शुभ संदेशों को फाड़ देता था। इन सब के लिए मैंने ईश्वर से माफी माँगी।

## ५. कुरान शरीफ़ की साक्षी

येशु का जन्म और उन के द्वारा किए चमत्कारों का बाइबिल में दिये गये कई वर्णन साधारण मनुष्य के मन में संदेह पैदा करने वाले हैं। हो सकता है, ये सब उनके शिष्यों द्वारा बढ़ा-चढ़ाकर लिखी हुई कहानी हों। विश्वासियों के लिए ये सब सच है तो विरोधियों के लिये सिर्फ एक कहानी। इसी संदर्भ में दूसरे एक ग्रंथ का साक्ष्य बहुत महत्वपूर्ण रहा।

येशु मसीह के जन्म के बारे में बाइबिल में लिखा है कि पवित्रात्मा द्वारा कुँवारी मरियम ने येशु को जन्म दिया। इस दैविक घटना को विज्ञान नहीं मानता क्योंकि इस घटना को विज्ञान साबित करने में असमर्थ है। इसका अर्थ यह नहीं है कि ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि भौतिक विज्ञान ने इतनी प्रगति की है तो भी वो जीवन को पूरी तरह समझने में असमर्थ रहा है।

विज्ञान के अनुसार शरीर में 72,000 नाड़ियाँ और नसें हैं, मज्जा, माँस और रक्त है, 55 प्रतिशत कार्बन, 23 प्रतिशत ऑक्सीजन, 14 प्रतिशत नाइट्रोजन, 7 प्रतिशत हाइड्रोजन, 1 प्रतिशत गंधक, लोहा, पोटाशियम और सोडियम है। अगर यह सही है तो वैज्ञानिक इन सबको इकट्ठा कर एक मनुष्य को क्यों नहीं बना पा रहा है? वैज्ञानिकों ने 'रोबोट' को तो अवश्य बना लिया, परन्तु वे जीवित चैतन्य मनुष्य को नहीं बना पाए हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि जीवन विज्ञान के दायरे से परे है। इसलिए आत्म-ज्ञानी कहते हैं– जीवनदाता 'ईश्वर हैं'। एक बच्चे के जन्म के लिए स्त्री-पुरुष का संसर्ग अनिवार्य है– यह सामान्य विज्ञान का तथ्य है, परन्तु पूर्ण सत्य नहीं। इसे समझने के लिए आत्मज्ञान चाहिएः जीवात्मा परमात्मा का अंश है। ईश्वर ने मिट्टी से मनुष्य का शरीर बनाकर उसमें अपनी आत्मा का अंश (श्वांस) डाला तब उसमें जीवन आया। महान ग्रंथ, बाइबिल में लिखे हुए इस सत्य को विज्ञान स्वीकार करे तो अच्छा होगा।

येसु के जन्म और उनके द्वारा किए गए चमत्कारों के बारे में कुरान शरीफ में भी लिखा है येशु नबी के जन्म के बारे में कुरान के 19वें अध्याय में स्पष्ट लिखा है– 'कन्या मरियम के पास मलक (दूत) ने आकर कहा ''तुम एक पुत्र को जन्म दोगी'' मरियम ने पूछा– यह कैसे होगा? मैं पुरुष को अभी तक नहीं जानती। उसे स्पर्श भी नहीं किया।'' दूत बोला ''ये सब ऐसा ही होगा। ईश्वर के लिए कोई कार्य असंभव नहीं है, तुम्हारी ये संतान मानवजाति के लिए एक वरदान और आदर्श साबित होगी।'' फिर कुरान में लिखा हैः ''ओह मरियम, तुम्हारे मुख से निकले एक ही शब्द के कारण खुदा तुम्हें एक और खुशखबरी सुना रहा है– वह, मरियम का बेटा, 'ईसा मसीह' कहलाएगा।'' जब बाइबिल ईसा को पवित्रात्मा से परिपूर्ण व्यक्ति कहती है, तो कुरान में लिखा है ''ओह ईसा', मरियम के पुत्र, तुम और तुम्हारी माँ को जो अनुग्रह मैंने दिया है– वह है पवित्रात्मा की शक्ति जब तुम पालने में या और पूर्ण वयस्क होकर जब तुम ने लोगों को संबोधित किया तो तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया, तुमने मेरी आज्ञा के अनुसार अंधों, कोढ़ियों और सब बीमारियों से पीड़ित लोगों को ठीक किया, तुमने मेरी आज्ञा से मरे हुओं को भी जीवित किया। इतने चमत्मकार देखकर भी लोग तुम को मारने आए।'' (सुर 5-110) इन सभी वाक्यों से बिल्कुल साफ मालूम होता है कि 'मोहम्मद नबी' की तरह 'येसु' एक पैगंबर ही नहीं थे। वे परमात्मा का ही अंश हैं। कुरान ने इस बात का समर्थन किया हैः ''मरियम में मैंने अपना अंश फूँका। उसने और उसके बेटे ने मानव जाति के सामने एक आदर्श स्थापित किया।'' (सुरा 21.19) मेरे मुसलमान भाइयो, बाइबिल में यही सत्य बतलाया गया है। जिस प्रकार नबियों और हम सबने स्त्री-पुरुष के संयोग से जन्म लिया, उस प्रकार येशु ने जन्म नहीं लिया है। बाइबिल में बताया गया है कि येशु को ईश्वर ने उनके मृत्यु के बाद उठा लिया यह बात कुरान में भी कही गयी है। ''ओ ईसा, तुम्हारे जीवन को खतरा पैदा करने का अवसर मैं यहूदियों को नहीं दूँगा। तेरा जीवनकाल पूर्ण होने पर मैं तुझे अपने पास उठा लूँगा। और जो मनुष्य तुम्हारे अनुयायी होंगे उन्हें मैं दुनिया के अन्त में ऊँचा पद दूँगा।'' (सुरा 3.55)

कुरान में येशु के क्रूस पर मृत्यु के बारे में स्पष्ट नहीं लिखा है, फिर भी येशु के क्रूस मृत्यु एवं पुनरूत्थान को स्वीकार किया गया है। ''मेरे जन्म दिवस, मरण दिवस और मेरा पुनरूत्थान होने वाले दिवस में मुझे शांति होगी'' (सुरा 19.33) ''ईसा की मृत्यु के दिन से पहले ही उनमें विश्वास न करने वाले वेद के लोग कोई नहीं होंगे। न्याय के दिन वह उन पर गवाह होगा''। (सुरा 4.1-59) ये सब पढ़ने से पता चलता है कि बाइबिल में जो कुछ लिखा है वह सत्य है।

''ओह नबी, ईसा के बारे में जो कुछ कहा गया है वह सब तुम्हारे रब के पास से मिला सत्य है इसलिए संशय करने वालों में तुम मत पड़ना''। (सुरा 3:60) कुरान में यह संदेश दिया गया है कि येशु अल्लाह का अंश है, पवित्रात्मा से उसने ये सब चमत्कार दिखाए, अल्लाह ने उसे सशरीर उठा लिया है। नबियों के बारे में कुरान में ऐसा कहीं जिक्र नहीं किया गया है। अतः इस्लाम के पंडितों द्वारा किये जाने वाला यह प्रचार कि येशु भी नबी की तरह केवल एक पैगम्बर है, यह सही नहीं है।

दूसरा एक सत्य भी समझ लो। 'ईसा नबी अन्त में फिर आएगा', यह मुसलमान भाइयों का विश्वास है। किसी नबी के लिये नबी फिर से आएगा, ऐसा क्यों नहीं? इसका मतलब, येसु ही नित्य और अनश्वर है।

इसका अर्थ होता है कि ईसा (येशु) से पाँच सौ वर्ष के बाद लिखी गई कुरान में अल्लाह के जो गुण बताए गए हैं वही गुण येशु में भी हैं।

**बाइबिल एवं कुरान के पदों को देखिएः**

1. येशु सृष्टिकर्त्ता है। ''उसके द्वारा सब कुछ उत्पन्न हुआ और उसके बिना कुछ भी उत्पन्न नहीं हुआ''। (योहन 1/3)
   अल्लाह सृष्टिकर्त्ता है। सारी सृष्टि उन्होंने रची है। (सुरा 2:177)
2. येशु आदि और अन्त है। ''जो है जो था और जो आने वाला है, वही सर्वशक्तिमान प्रभु ईश्वर करता है– आल्फा और ओमेगा (आदि और अन्त) मैं हूँ! (प्रकाशन ग्रंथ 1/8)
   अल्लाह आदि और अन्त है। (सुरा 57:3)
3. येशु न्यायधीश है। (मत्ती 25/31-46)
   अल्लाह न्याय करने वाला है। (सुरा 3:18)
4. येशु पापविमोचक है। (लूका 7/47-48)
   अल्लाह माफी देने वाला और पापविमोचक है। (सुरा 4:43)
5. येशु सदा साथ है। (मत्ती 28/20)
   अल्लाह हमेशा हमारे नज़दीक है और साथ है। (सुरा 2:186)
6. येशु पवित्र है। (1योहन 3/5-6)
   अल्लाह पवित्र है। (सुरा 59:23)
7. येसु मरे हुओं को ज़िंदा करने वाला और न्याय करने वाला है। (योहन 5/21)
   अल्लाह जीवन देता है और मौत भी देता है। (सुरा 3:156)
8. येसु ने मृत्यु पर विजय पायी है। (योहन 16/33)
   अल्लाह सभी पर विजयी है। (सुरा 40:2)

इस प्रकार तुलना करें तो कितनी ऐसी सच्चाइयाँ कुरान के पन्नों में जो बाइबिल से मिलती जुलती हैं!

**इसलिये कुरान शरीफ़ में येशु को जो महत्व दिया गया है उसे समझ कर लोग यथार्थ सत्य की ओर मुड़ें।** मनुष्य और ईश्वर के बीच में एक ही 'मध्यस्थ' है, वह है परमात्मा की शक्ति से कन्या मरियम की कोख में उत्पन्न एवं भूमि पर जन्मा येशु (ईसा) मसीह। वे ही दुनिया का उद्धारकर्ता एवं रक्षक है।

## Foot Note:

**कुरान शरीफ़ की कुछ आयतें :**

सुरा 5:110 ''जब खुदा (ईसा से) फरमाएगा कि ये ईसा बिन मरियम! मेरे उन एहसानों को याद करो, जो मैंने तुम पर और तुम्हारी वालिदा पर किए जब मैंने रूहुल (यानी जिब्रिल) से तुम्हारी मदद की। तुम झूले में एवं जवान होकर एक ही नस्क पर लोगों से बातें करते थे और जब मैंने तुम को किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील सिखायी और जब तुम मेरे हुक्म से पैदाइशी अंधे और सफेद दाग वाले में हुक्म से चंगा कर देते थे और मुर्दे को मेरे हुक्म से ज़िदा किया, जब तुम उनके पास खुले निशान लेकर आए, तो जो उनमें से काफ़िर थे, कहने लगे कि यह तो खुला जादू है''।

सुरा 21:91 ''और उन (मयम) को (भी याद करो) जिन्होंने अपनी पाकदामनी को बचाए रखा, तो हमने उनमें अपनी रूह फूँक दी और उनको और उनके बेटे को दुनियावालों के लिये निशानी बना दिया।''

सुरा 3:55 ''उस वक्त खुदा ने फरमाया कि ईसा! मैं तुम्हारी दुनिया में रहने कि मुद्दत पूरी करके तुम को अपनी तरफ उठा लूंगा और तुम्हें काफ़िरों (की सोहबत) से पाक कर दूँगा और जो लोग तुम्हारी पैरवी करेंगे, उनको काफिरों पर कियामत तक फाइक (यानी बढ़कर और गालिब) रहूँगा, और तुम मेरे पास लौट कर आओगे, तो जिन बातों में तुम इख्तिलाफ करते थे, उस दिन तुम में उन का फैसला कर दूँगा और उन का कोई मददगार न होगा।

सुरा 19:33-6 ''और जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन मैं मरूँगा और जिस दिन जिन्दा कर के उठाया जाऊँगा, मुझ पर सलाम (व रहमत) है।

4-159 और कोई अहले किताब नहीं होगा, पर उनकी मौत से पहले उन पर ईमान ले आयेगा और वह कियामत के दिन उन पर गवाह होंगे।''

3/58-60 ''(ऐ मुहम्मतद!) यह हम तुमको (खुदा की) आयतें और हिक्मत भरी नसीहतें पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं। ईसा (येशु) का हाल खुदा के नज़दीक आदम का-सा है कि उसने (पहले) मिट्टी से उनका कालिब बनाया, फिर फरमाया कि (इन्सान) हो जा, तो वह इन्सान हो गये। (यह बात) तुम्हारे परवर-दिगार की तरफ से हक है, सो तुम हरगिज़ शक करने वालों में न होना।''

2:117 ''(वही) आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है। जब कोई काम करना चाहता है, तो उसको ईर्शाद फरमा देता है कि हो जा तो वह हो जाता है।''

57:3 ''वह (सबसे) पहला और (सबसे) पिछला और (अपनी कुदरतों से सब पर) जाहिर और अपनी जात से) पोशीदा है और वह तमाम चीज़ों को जानता है।''

3:18 ''जो इनसाफ पर कायम है।''

4:43 ''बेशक खुदा माफ करने वाला और बख्शनेवाला है।''
2:186 ''और (हे पैगम्बर!) जब तुम से मेरे बन्दे मेरे बारे में मालूम करें, तो (कह दो कि) मैं तुम्हारे पास हूँ।''
59:23 ''वहीं खुदा है, जिस के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। बादशाह (हकीकी) पाक जात (हर ऐब से) सलामती, अम्न देने वाला, निगहवान, गालिब, जबरदस्त, बड़ाई वाला।''
3:156 '...और जिन्दगी और मौत तो खुदा ही देता है।...''

## ६. महान ग्रन्थ और ईश्वर

जब से मैंने येशु को जाना परमात्मा ने मेरे हृदय ग्रंथ को ही खोल दिया। बहुत कुछ लिखने की प्रेरणा मुझे तीव्र गति से मिलने लगी। बहुत कुछ लिखने के बाद एकदम मुझे वेदोपनिषद, गीता और भागवत् में ईश्वर के बारे में क्या बताया है, यह जानने की उत्सुकता हुई। परन्तु इन सब ग्रंथों को खरीदने का पैसा कहाँ से आयेगा? परमात्मा ने सारे ग्रंथों को बड़े अद्भुत तरीके से मेरे हाथों में पहुँचा दिया। बहुत जिज्ञासा से मैं ग्रंथों को पढ़ने एवं परखने लगा तो मैं अचम्भे में पड़ गया।

कारण– उपनिषद, गीता और भागवत् में युगों पहले ही यह साफ लिखा गया है कि ''ईश्वर आत्मा है और हमारा शरीर मंदिर है।'' कई जगह मूर्तिपूजा के अनुकूल और प्रतिकूल बातें भी बताई गई हैं। लेकिन ऋगवेद में कहीं भी अपने द्वारा बनाई गई मूर्ति की पूजा करने की प्रवृत्ति नहीं है। प्रकृति की शक्तियों, जैसे सूर्य, चंद्र, समुद्र, अग्नि और वायु को खुश करने हेतु मनुष्य द्वारा की गई उनकी स्तुति और प्रार्थना ही वेदों का मुख्य विषय है। विभिन्न प्रकार की बलि और हवन करने की चर्चा भी यहाँ है। मलयालम भाषा के प्रसिद्ध महाकवि वल्लात्तोल ने जो कहा है, देखो ''ऋगवेद हिन्दु धर्म का मूल ग्रंथ है फिर भी इसमें, हिन्दु धर्मावलंबी लोग आजकल जिन देवी देवताओं की आराधना करते हैं, उनका कोई स्थान नहीं है। देवी पूजा और लिंग पूजा को ऋगवेद नहीं जानता। **(ऋगवेद संहिता, पृष्ठ 14)**

उपनिषदों को पढ़ा जाए तो पता चलता है कि आध्यात्मिक ज्ञान से भरा पूर्ण कुम्भ ही ज्ञानियों ने दुनिया के सामने खोल रखा है। लेकिन सवर्ण पुरोहितों ने अपने अधिकार और सुख-लोलुपता के लिए इस सत्य को दुनिया से छुपाकर स्वनिर्मित कहानियाँ लोगों के दिमाग में भर दी है। फलस्वरूप, जनसमूह से आध्यात्मिकता लुप्त हो गई। अंधविश्वास और अधर्म में पड़कर लोग पापी बन गये।

महत् ग्रंथों में ईश्वर का वर्णन करते कुछ श्लोकों पर नज़र डालें:

**कठोपनिषद 2:3:17**

अंगुष्ठमात्रोपरुपोन्द्रात्मा
सदा जनानां हृदयो सन्निविष्टा
(अर्थात् सर्वअंतर्यामी परमेश्वर हृदय के अनुरूप अंगुष्ठमात्र रूप में हमेशा लोगों के अंतर में विराजमान है।)

**कठो. 2:23**

नायमात्मा प्रवचनेन लभयोः नमेधया न बहुनाश्रुतेन। यमेवैषवृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा पिवृणुते तनूँ स्वा।

अर्थात् यह आत्मा न तो प्रवचन से, न बुद्धि से, न बहुत सुनने से ही प्राप्त होता है। जो साधक मुझे अपनाते हैं उसकी आत्मा को अपने स्वरूप में ही प्रकट कर देता है।

**मुण्डकोपनिषदः**

अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयोहिशुभोलयं पश्यन्तियतयः क्षीणदोषाः

शरीर के हृदयाकाश में ज्योतिस्वरूप और पावन परमात्मा को शुद्ध हृदयवाले लोग साक्षात्कार करते हैं। यही येशु ने कहा था, ''धन्य हैं वे, जिनका हृदय निर्मल है! वह ईश्वर के दर्शन करेंगे। शुद्ध हृदयवाले लोग ईश्वर का दर्शन करेंगे।'' (मत्ती 5/8)

**छान्दोग्योवानषदपनिषद 6-8-7**

सयऐष्योऽलणिमैतदारम्यमिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसिश्वेतकेतो

अति सूक्ष्म जगत का कारण जो भी तत्त्व है वो इस पूरे जगत में प्रकाशित हो रहा है वही ही सत्य है, वही परमात्मा है (वही है तू)। यहाँ महर्षि समझा रहे हैं कि ईश्वर आत्मा है और इस आत्मा का मंदिर है शरीर। ''क्या आप लोग यह नहीं जानते कि आपका शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है? वह आप में निवास करता है और आप को ईश्वर से प्राप्त हुआ है। आपका अपने पर अधिकार नहीं। (1 कुरि. 6/19)

बाइबिल के इस वचन का अर्थ भी कुछ और नहीं है।

**ग्वेताश्वरोपनिषद 4:17**
एष देवा विश्वकर्मा महात्मा सदा जनानां हृदयो संनिविष्टः।

विश्वरचयिता परमेश्वर सदा मनुष्यों के हृदय में विराजमान है।

**योगशिरोपनिषद** 1-168
देहम शिवालय प्रोक्तम सिद्धितम सर्वदेहिनाम्

अर्थात् देह शिव (आत्मा) का मंदिर है। सभी लोगों को सिद्धि वही देता है।

गीता में मूर्तिपूजा के अनुकूल तो लिखा है फिर भी यह नहीं लिखा है कि ऐसी आराधना पूर्ण रूप से ठीक है। इस का सबूत है अध्याय 9 का यह श्लोक।

''यान्ति देवव्रता देवान पितृन्यान्ति पितृवताः
भूतानियान्ति भूतेज्यायान्ति मद्याजिनों पिमाम्'' (25)

(देवभक्त देवों को, पितृभक्त पितृओं को, भूतोपासक भूतों को प्राप्त करता है और लेकिन मेरी उपासना करने वाला मुझे ही प्राप्त करता है।) इसका अर्थ यही है कि परमात्मा की उपासना ही श्रेष्ठ है और ईश्वर को प्राप्त करना तो उसकी पूजी करनी है।

**श्रीमद् भागवत देखोः उस में भी मूर्तिपूजा को एक नीचे रीति की उपासना समझा गया है।**

''अहमसर्वेष्ट भूतेष्ट भूतात्मावास्थितितस्सदा तमवग्ज्ञाय माम् मर्त्यः करुतेर्चाविडम्बनम् (3:29-27)

(मैं सर्वात्मा हूँ। मैं सभी प्राणियों में सदा विद्यमान हूँ। ऐसे मुझ परमात्मा का तिरस्कार करके मूढ़ मनुष्य मूल्यरहित विगृहों की पूजा करते रहते हैं।

अहमूर्चा वचैरद्रव्यः क्रियायोन्पेन्नया नखे नैव तुष्येर चितोलचायम् भूताग्रामावमानिनः (3:29-27)
अर्थात् सर्वअन्तरयामी, सर्वभूतों में रहने वाला मैं, दान मान, मैत्री और समदृष्टि से पूजा जाना चाहिए। जो मूर्तिपूजा में ध्यान देते हैं वो निम्न स्तर के भक्त हैं– यही है श्रीमद् भगवत की शिक्षा)

अर्चायमेव हरये पूजाम् यः श्रद्धयेहतेः

नतद भक्तेष्ट चात्येष्ट स भक्तः प्राकृतः स्मृतः (11:2:47)

(जो कोई विग्रह में श्रद्धा रख कर पूजा करते हैं और ईश्वर भक्तों और अन्य जीव जन्तुओं का तिरस्कार करते हैं वे निम्नस्तर के भक्त हैं।)

भारत के महन्त् ग्रथों में ईश्वर के बारे में पूर्ण सत्य लिखा है। फिर भी भारत में ये सत्य प्रचारित नहीं हुआ, उसके स्थान पर सवर्ण पुरोहित वर्ग सोच-समझकर बनाए गये अंधविश्वासों के गड्ढे में लोग जा गिरे हैं। कई लोगों ने संस्कृत में कई ग्रंथों की रचना करके अपने-अपने हितों को ईश्वर के ऊपर थोप दिया।

इसलिए सत्य क्या है और झूठ क्या है इसका अधिकतर लोगों को पता नहीं चला। भारत के महान ग्रंथों के अध्ययन से मुझे बहुत जानकारी मिली। ईश्वर के नाम पर चल रही लूट और अंधविश्वासों का मुझे पता चला। भारत की आध्यात्मिकता पूर्ण रूप से अंधविश्वास है– ऐसी गलतफहमी भी दूर हो गई। इसके साथ मुझे ऐसा लगा कि योग मार्ग के द्वारा आत्मा का दर्शन किया जा सकता है। इसलिये मैं एक आश्रम में, एक ऐसे गुरु के पास गया। जिसने मुझे योग साधना से मिलनेवाली सिद्धियों के बारे में और चमत्कारों के बारे में बताया। ये सब सुनकर मैं येशु द्वारा प्राप्त अनुग्रह को भूल गया यहाँ तक कि जो ज्ञान मुझे मिला है, यह भी मेरे मन से उड़ गया।

आश्रम में जाने के विचार से घर वापस आया। तब मेरा मन फिर कहने लगा कि इन सभी महान ग्रंथों में बताया गया परमात्मा का अंश ही है जिसने दुनिया में, येशु के रूप में अवतार लिया है। उनका पूर्ण हृदय से साक्ष्य नहीं दिया तो बड़ी आत्मग्लानि होगी। **स्वामी बन कर आश्रम में बैठने से अच्छा होगा, स्वामी बन कर येशु को गुरु मानकर उन्हें लोगों तक पहुँचाकर लोगों की मदद करना। मैं ने आखिरी में यही निर्णय लिया।** स्वामी का अर्थ है 'स्वयं को जानने वाला', स्वयं यानि 'आत्मा'। 'वेषभूषा' धारण करके, पत्थर की पूजा करके, दाढ़ी और बाल बढ़ा के, हाथ में डंडा और शूल लेकर कोई स्वामी नहीं बनता। स्वामी वही है जिसको यह बोध हुआ कि शरीर मंदिर है, इस मंदिर में निवास करने वाली आत्मा सभी मनुष्यों के भीतर है। यह बोध प्राप्त स्वामी कभी किसी ईश्वर, धर्म या मंदिर के नाम पर झगड़ा नहीं करता, क्योंकि वह जानता है कि उस के सामने चलता फिरता हर व्यक्ति एक मंदिर है। क्योंकि जब ब्रम्हवाहक शरीर-मन्दिर आँखों के सामने नाच रहे हैं तो हाथों से बने पत्थरों के मन्दिरों एवं मूर्तियों का क्या महत्व है?

श्रीमद् भागवत में ऐसा एक महत्वपूर्ण श्लोक हैः–
कोलतिप्रयासोलसुरबालका हिरेरूपासने स्वे हृदिश्चिद्रवत्सतः (7:7-38)

हे असुरबालकों, अपने हृदय में आकाश की भाँति व्याप्त आत्मयस्वरूप ईश्वर की आराधना करने में तुम्हें क्या क्लेश है?

मनुष्य, तुम अंधविश्वासों को छोड़कर सत्य को पहचानो, अपने शरीर को ही मंदिर समझो और उसे पापों से मैला न करो। भौतिक माया में फँसकर अपने जीवात्मा को नरक में नहीं डालना। परमात्मा, येशु के जरिए हर मानव को इस सत्य को समझा रहा है। येशु ने कहा ''मैं तुमसे कहता हूँ ...यदि तुम पश्चात्ताप नहीं करोगे, तो सब-के-सब उसी तरह नष्ट हो जाओगे। पश्चात्ताप करो, पश्चात्ताप नहीं करोगे तो तुम सब लोगों का नाश होगा''। (लूका 13/3)

आत्मा की खोज करने वाले ऋषि मुनियों ने जिस आत्मा को पहचाना है वही आत्मा है जिसे येशु ने दिखाया। वे दोनों एक हैं, दो नहीं।

बृहदारण्यकोपनिषद (1.3:27) में एक महत्वपूर्ण श्लोक हैः–
असतो मा सतगमयाः
तमसोमा ज्योर्तिर्गमयाः
मृत्यों मा अमृतमर्गमयाः
(असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से जीवन की ओर मुझे ले चलो।) ज्ञानियों की इस प्रार्थना का उत्तर''– प्रभु 'येशु' ही है। उन्होंने कहा ''मैं दुनिया की रोशनी; ''सत्य, मार्ग और (नित्य) जीवन हूँ।''

# ७. स्वामी विवेकानन्द और येशु

मेरी इस ईश्वर की खोज में, ईश्वर आत्मा है और उसी आत्मा को उसने येशु के जरिए दुनिया को दिखाया, है, यह सच्चाई मेरी समझ में आ गयी। फिर भी मैं अपनी मानव बुद्धि से सोचने लगा कि बड़े-बड़े स्वामियों ने इस सत्य को क्यों नहीं बताया? स्वामी विवेकानन्द जी ने येशु के बारे में क्या कहा होगा? यही रहा मेरा सवाल।

चमत्कार ही बताऊँ! उसी रात को मुझे स्वामी जी ने दर्शन दिया। उनके हाथ में 'विवेकानन्द साहित्य सर्वस्वम्', भाग चार था उन्होंने मुझे 176 वें पृष्ठ पर 'ईश्वर अवतार' दिखाया। मैंने आश्चर्य से उन के चेहरे की ओर देखा तो वे मुस्कुरा कर बोले, 'बेटा, तुमने सत्य को जान लिया है, येशु के अतिरिक्त एक पूर्ण गुरु दुनिया में अन्य कोई नहीं।

अगले दिन बड़े सबेरे ही, विवेकानन्द साहित्य कहाँ मिलेगा, यह पता करने के लिए मैं 'कन्नूर' गया। परन्तु बिना पैसे के क्या करूँ मैं– यही सोच मुझे परेशान कर रही थी। लेकिन ''तुम पहले मेरा राज्य और नीति खोजो, उसके साथ-साथ तुम्हें सब कुछ मिलेगा''। (मत्ती 6/33) येशु के इस वचन को मैंने चमत्कारिक ढंग से पूरा होते देखा। ''विवेकानन्द साहित्य'' के सातों भाग किसी व्यक्ति के द्वारा ईश्वर ने उन्हें निशुल्क ही मुझ तक पहुँचा दिया। उन सभी ग्रंथों को प्राप्त करने की बड़ी खशी से, उन्हें घर ले गया और 'भाग 4' के 176 वें पृष्ठ को जो मैंने दर्शन में देखा था, जल्दी से खोलकर देखा तो मैं चकित रह गया : 'ईश्वर अवतार', विवेकानन्द स्वामी की अमृतवाणी जो कभी कोई मिटा नहीं सकता, मेरी आँखों के सामने चमक रही थी। **''येशु मसीह मानवस्वरूप में ईश्वर था, सगुणेश्वर; उसने कई बार, कई तरह स्वयं को दिखाया है। केवल वे ही आराधना किये जाने लायक हैं। ईश्वर की केवल-भाव में उनकी आराधना नहीं की जा सकती है। ऐसे ईश्वर की आराधना करना असंगत है। हमें येशु की आराधना करनी है। येशु के बिना ईश्वर की आराधना, जितनी जल्दी छोड़ी जा सके, अच्छा है। येशु के अतिरिक्त एक अन्य ईश्वर की रचना करने की बात यदि तुम सोच रहे हो, तो तुम ईश्वर को ही मार रहे हो। यदि मुक्ति प्राप्त करना चाहते हो तो येशु के निकट रहो। वे, तुम जिस अधीस्वर की कल्पना कर सकते हो, उनसे भी श्रेष्ठ है। यदि तुम येशु को एक निरे मनुष्य समझते हो तो उनकी आराधना नहीं करना। येशु में ही ईश्वर का अवतार हुआ है। येशु से पहले ईश्वर सब जगह और सब में था लेकिन येशु को देखकर ही हमने ईश्वर को देखा और समझा है। वही ईश्वर है। पवित्रात्मा का यह ज्ञान मिले तो तुम्हें शांति और आनन्द मिलेगा। जब तुम येशु को अपने मन में स्वीकार करना शुरू करते ही तुम को आनन्द का अनुभव होगा''।**

हे भाइयो और बहनों, दुनिया स्वामी जी को आदरणीय और हिन्दुत्व का प्रवक्ता मानती है। उन्होंने क्या कहा है तुम ने सुना है ना? येसु के विरोधियों से मैं यह कहना चाहता हूँ कि आध्यात्मिकता के नाम पर, सच्चाई से दूर रह कर, तुम धोखे में डाले जा रहे हो। तुम दूसरों को सुनकर धोखे में नहीं पड़ना। येशु और उनके सच्चे अनुयायियों को मिटाने की तुममें या दुनिया में काई ताकत नहीं है। ऐसा है तो रोमी साम्राज्य जहाँ येशु पर इतना जुल्म हुआ एक ईसाई-बहुल राष्ट्र नहीं होता। क्योंकि येशु प्रेम है, त्याग की मूर्ति है, उद्धार का पर्याय है और वे पुनरूत्थान की शक्ति हैं। सर्वोपरी, वे दुनिया के मसीहा है। ऐसे येशु को मारने के लिए तलवार उठाने वाले लोगों के संगठन का सर्वनाश होगा। येशु को कुछ नहीं होने वाला है। येशु की वाणी फैलाने में आजकल बहुत कठिनाइयाँ हैं। भारतवासियों को अपना मनोभाव बदलना होगा उसमें हमारी मुक्ति है। विवेकानन्द जैसे आदरणीय स्वामी द्वारा लिखे सत्य को फैलाना है। उनकी अमृतवाणी भी भारत के लोगों से संवाद का साधन बनेगी। अंधविश्वासों से निकल कर उसके द्वारा भारत जाग उठेगा और उसका नवनिर्माण होगा। भारत के नवोत्थान का नायक होगा– येशु मसीहा सत्य, स्नेह, क्षमा, त्याग

और उद्धार ही हमारा हथियार होना चाहिए। दुनिया में कहीं भी ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो इन पंचरत्नों और येशु के सामने नतमस्तक न किया हो।

# ८. प्रभु येशु और ईसाई धर्म

इतिहास के पन्नों को पढ़ें तो पता चलता है कि दुनिया में किसी न किसी प्रकार से ईश्वर की आराधना होती आयी है। सूर्य, चंद्र, वायु, अग्नि, मेघ गर्जन और समुद्र सब मनुष्यों की समझ से परे थे। इन भयंकर प्रपंच दृश्यों की सुन्दरता और उनके रौद्र-भाव से भयभीत और विस्मित होकर लोग इन भयंकर चीजों को बनाने वाले को भूलकर, उनकी आराधना करने लगे। इन सब के सृष्टिकर्त्ता ईश्वर की शक्ति, ज्ञान एवं सौंदर्य को पहचानने एवं समझने की शक्ति से वे वंचित रहे।

नास्तिक लोग भी हमारे बीच हैं। अगर किसी चीज़ का अस्तित्व है तभी यह कहा सकता है कि उसका अस्तित्व 'नहीं' है'। कुछ लोग यूं भी कहते हैं कि जिस ईश्वर को हम देख नहीं सकते उसे कैसे हम स्वीकार करें। उनके लिए यह उत्तर है कि बिजली को कोई देख नहीं सकता है। वायु और जीवन को भी नहीं देखा जा सकता, फिर भी उन्हें महसूस किया जा सकता है। आत्म-ज्ञानियों का यही उत्तर है– अनुभव। अनुभव से पता चलता है कि यह प्रकृति, यह सारा ब्रह्माण्ड एक शक्ति के अधीन है। उस शक्ति का अंश सब में व्याप्त है। ईश्वर को न माननेवालों के अन्दर भी वह शक्ति है। उसके कारण उनका अस्तित्व बना रहता है। भौतिक शास्त्रों का ज्ञान रखने वाले लोगों को यह सोचना चाहिए कि उनके अन्दर जीवात्मा नहीं है तो वे कैसे खोजेंगे? जब जीवन नहीं होगा तब वे मात्र शव ही होंगे। वह जीवात्मा क्या है, यह भौतिक विज्ञान आजतक नहीं खोज पाया है। इस बात को नहीं भूलना चाहिये कि जब जान शरीर से निकल जाती है उस समय केवल विलाप किया जा सकता है और उसे वापस नहीं ला सकते।

**तैत्तिरीयोपनिषद् में एक प्रमुख श्लोक है:–**

''को हये वान्यात्मक प्राण्यात य देष आकाश आनन्दो नस्यात'' (2:7)

(अर्थात्, आनन्दरूपी आत्मा हृदयाकाश में नहीं होता तो कौन सांस ले पाता और कौन चल सकता।)

इसलिए; ऐ भौतिकवादियो, यह कहकर गलती न करो कि ईश्वर नहीं है; ईश्वर को समझाने का प्रयास करो। जीवात्मा शरीर से निकल जाने पर, जैसा कि बाइबिल में कहा गया है 'ऐ मानव तू सिर्फ मिट्टी है', यह सत्य निखर आता है; और अमर-आत्मा अपने द्वारा किए गये पाप और पुण्य के अनुसार स्वर्ग या नर्क प्राप्त करता है। 1961 में अन्तरिक्ष में यात्रा किए हुए एक व्यक्ति, रूस का वैज्ञानिक, श्री यूरीगगारिन, पृथ्वी से 284 कि.मी. की ऊँचाई पर घूम-घूम कर विजयी होकर लौटा। उसने– ''अपनी इस अंतरिक्ष यात्रा के दौरान मैं ने चारों तरफ ढूँढ़ा, लेकिन मुझे कोई ईश्वर या देवदूत नहीं मिला।'' वह 'गगारिन' वास्तव में एक न समझ है ना? अपने हृदय में वास करने वाले ईश्वर को वह इधर-उधर खोजता रहा; इसलिए वह उससे नहीं मिला। यदि उसमें जीवात्मा न होती तो वह अंतरिक्ष में कैसे पहुँचता? अधिकांश लोगों की यही स्थिति है। वे भी ईश्वर को बाहर ढूँढते हैं। उनको यह समझ में नहीं आता कि शरीर ही मंदिर है।

''सर्व ज्ञस्यव जनस्यास विष्णुर्भयन्दरे स्थितः तम परिज्यये यान्ति बहिर्विष्णु नराधमाः''

(अर्थात् सभी लोगों के अन्दर विष्णु (आत्मा) निवास करता है। उसे वहाँ छोड़कर नराधम लोग बाहर ढूँढते रहते हैं। 'योग वसिष्ठ' में वसिष्ठ ने यह सब बातें कहीं हैं।

इन सब को पढ़कर भी लोग ईश्वर को बाहर ढूँढते रहते हैं और उसके नाम पर एक दूसरे के विरुद्ध अपराध करके अत्याचार में डूब जाते हैं। प्राकृतिक शक्तियों की आराधना कर मूर्तिपूजा शुरू हुई। मृगबलि, नरबलि आदि करते हुए लोग पाप और अंधकार में गिर गये।

इसी समय अर्थात् कलयुग के वर्ष 3000 में येशु दुनिया में आये। यहूदी संस्कार में जन्म लिये येशु बहुत छोटी उम्र से ही उन मंदिरों में जाकर, जहाँ पुरोहित भाषण देते थे, लोगों को ईश-राज्य के बारे में बताने लगे। वे लोगों को सारे अधर्मों को छोड़कर व पश्चाताप करके ईश्वर की राह पर लौट आने की जरूरत के बारे में समझाते थे। रीति-रिवाज़ों के पालन पर जोर देकर जनता को लूटने वाले पुरोहितों, शास्त्रियों और फरीसियों को यह अच्छा नहीं लगा। बढ़ई के बेटे, इस छोकरे में इतना ज्ञान कहाँ से आ गया– उन सभी को यही चिंता हुई। लेकिन जब येशु कई चमत्कार भी करने लगे और जनता येशु के उपदेश सुनने के लिए एकत्र होने लगी तो पुरोहितों की नींद भंग होने लगी।

पवित्रात्मा से भरा हुआ येशु उन लोगों के पापी हृदयों को समझता था। इसलिए उसने पुरोहितों का विरोध करते हुए कहा कि ''यदि अंधा अन्धे को ले चले, तो दोनों ही गड्ढे में गिर जायेंगे।'' (मत्ती 15:14)

येशु ने उन से फिर कहाः ''ढोंगी शास्त्रियों और फ़रीसियों, धिक्कार तुम लोगों को! तुम पुती हुई कब्रों के सदृश हो, जो बाहर से तो सुन्दर दीख पड़ती हैं, किन्तु भीतर से मुरदों की हड्डियों और हर तरह की गन्दगी से भरी हुई हैं। इसी तरह तुम भी बाहर लोगों को धार्मिक दिखाई पड़ते हो, किन्तु भीतर से तुम पाखण्ड और अधर्म से भरे हुए हो। (मत्ती 23/27-28) ऐसी कठोर आलोचना ने उन पुरोहितों के अस्तित्व को हिला दिया। वे लोग येशु को खत्म करने की ताक में रहने लगे। उन पुरोहितों के मनसूबों को जानते हुए भी येशु निडर होकर अपना कार्य करते रहे। अधर्मियों को पश्चात्ताप करवा के, रोगियों को चंगा कर के उसने कई यात्राएँ की। येशु ने कई रोगियों को चंगा करते समय कहा ''तुम्हारे पाप माफ हो गए।'' इस वाक्य ने कई लोगों में सवाल पैदा किया– ईश्वर को ही पाप क्षमा करने का अधिकार है; ये कौन है? पाप क्षमा करने का अधिकार इसे किस ने दिया? उन्होंने यह भी देखा कि येशु ने क्षमा किया तो बीमार स्वस्थ हो जाते हैं। लोगों के मन की बात जानकर येशु ने कहा ''मैं स्वयं अपने से कुछ भी नहीं कर सकता। मैं जो सुनता, उसी के अनुसार निर्णय देता हूँ और मेरा निर्णय न्यायसंगत है; मैं अपनी इच्छा नहीं, बल्कि जिसने मुझे भेजा उसकी इच्छा पूरी करना चाहता हूँ।'' (योहन 5/30)। ''मुझमें निवास करने वाला पिता मेरे द्वारा अपने महान् कार्य सम्पन्न करता है।'' (योहन 14/10)

येशु के इन वचनों को पढ़ने से पता चलता है कि उसने ईश्वर के धर्म का प्रचार किया। येशु से पहले के महान ग्रंथों में वर्णित परमात्मा का हित ही येशु का धर्म है। येशु का धर्म, येशु का मार्ग, ईश्वर का धर्म है। ''मैं और पिता एक हैं।'' येशु ने कई बार यह दुहराया है। इस का अर्थ है कि येशु की आत्मा और पिता ईश्वर एक हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो येशु के शरीर में प्रकट हुई आत्मा ईश्वर की आत्मा ही है।

**''आदि में शब्द था, शब्द ईश्वर के साथ था और शब्द ईश्वर था। वह आदि में ईश्वर के साथ था। उसके द्वारा सब कुछ उत्पन्न हुआ...उस में जीवन था और वह जीवन...मनुष्यों की ज्योति था। (1/1-4) उस शब्द ने शरीर धारण कर हमारे बीच निवास किया। (योहन 1/14) ये वचन येशु की ईश्वरत्व का साक्ष्य दे रहा है।**

ईश्वर का कोई रूप नहीं है, वह निराकार है, आत्मा है। सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ और सब का पालन करने वाला है। वही ईश्वर येशु के रूप में मनुष्य बनकर हम साधारण मनुष्यों के बीच मानवजाति का उद्धार करने आया। पापियों को पश्चाताप की जरूरत समझाने, पीड़ितों की रक्षा करने, रोगियों को चंगा करने और मनुष्यों के पापों का फल स्वयं भोगने के लिये वह धरती पर आया। येसु ने कहा, ''निरोगियों को नहीं

रोगियों को वैद्य की जरूरत होती है, मैं धर्मियों को नहीं, पापियों को बुलाने आया हूँ।'' (मारकुस 2/17) ये वचन कितना स्पष्ट है।

शारीरिक वासनाओं में फँसकर लोग अनगिनत अधर्म करते हैं। इस प्रकार दिन-प्रतिदिन पाप करते हुए उनका पतन हो रहा है। कोई व्यक्ति पापी है या नहीं, यह बात उसी को तय करने दो। पाप कर्मों के विषय में येशु ने जो कहा वह इस प्रकार हैः ''बुरे विचार, हत्या, परगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा– ये सब मन से निकलते हैं। यही बातें मनुष्य को अशुद्ध करती है, बिना हाथ धोए भोजन करना, मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता।'' (मत्ती 15/20) ''जो मुँह में पड़ता है वो पेट में चला जाता है और शौचघर में चला जाता है। जो मुँह से निकलता है वो मन से आता है और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। (मत्ती 15/17) माँस-मछली खाने से कोई अशुद्ध नहीं होता।

ईश्वर सत्य है, प्रेम है, करूणा है, चमत्कार करने वाला है, क्षमा करने वाला है और रक्षा करने वाला है, सभी महान ग्रंथों में लिखित है यह सत्य, येशु के रूप में दुनिया के सामने प्रकट हुआ है। येशु की जीवनी देखे तो पता चलता है कि मानव के प्रति इतना महान प्रेम, करूणा, दया, क्षमा, सत्य, रक्षा और त्याग इत्यादि और किसी ने नहीं दिखाया है। उनके ऊपर अभी तक कोई पाप का लांछन लगा पाया है क्या? ''यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा भी उसके आगे कर दो।'' यह बात येशु ने सिर्फ कही नहीं बल्कि अपने जीवन में कर भी दिखाई है। निश्चय ही मानव के रूप में ईश्वर की आराधना करनी है, तो येशु के अतिरिक्त अन्य कोई योग्य नहीं है। दूसरे ढंग से देखा जाए तो येशु से पहले ईश्वर सर्वव्यापी और सर्वेश्वर था। निश्चय ही मानव के रूप में उस सर्वव्यापी और सर्वेश्वर का चेहरा देखने का अवसर, मानव जाति को येशु मसीह में मिला। मानवीय रूप में ईश्वर की आराधना करनी है तो येसु के अतिरिक्त अन्य कोई योग्य नहीं है। कई लोगों के लिये पुर्नविचार की जरूरत है। येशु केवल एक मनुष्य है और वो पाश्चात्य है– ऐसा समझकर उन को दूर करने वाले नहीं जानते कि वे ईश्वर को ही दूर कर रहे हैं। येशु मसीह को अपने जीवन में स्वीकार करते समय तुम ईश्वर को ही स्वीकार करते हो। उसी क्षण तुम्हारे लिए अंधकार से प्रकाश में आने का रास्ता खुल रहा है।

बहुदेवाराधना, विग्रह आराधना, मंत्र-तंत्र, ये सभी कोटि की आराधना है और कुछ लोगों के लिए लूट का साधन है।

''शाम बोदाभीः पुष्पैर देव आत्माययदर
चुते तत्तू देवार्चनम् वीद्धी नाकारारचनमर्चनम।।''

(शम और बोध जैसे फूलों से आत्मा का पूजन करते हैं तो वही देवपूजा है। पत्थर या लोहे से बनाई मूर्ति की पूजा करना कोई देवपूजा नहीं।)

येशु ने कहा ''ईश्वर आत्मा है उसके आराधकों को चाहिए कि वे आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें।'' (योहन 4/24) येशु के इस वचन का अर्थ यही है।

''कालम यञ्ज्ञता पोदानतीर्थ देवार्चन भ्रमैः
चिरमाधि शतो पेताः क्षपयन्दि मृगाइवः

(याग, तम, दान और तीर्थ-स्नान और कई तरह की देवपूजा आदि में भ्रमित होकर लोग कई सालों दुःखी होकर मवेशियों जैसा जीवन बिता रहे है।) श्री राम के गुरु, महर्षि वसिष्ठ, ऐसा कह रहे हैं तो परम्परागत अंधविश्वासों के कंगन को उतार फेंकने में झिझकना नहीं।

''एक व्यक्ति को आध्यात्मिक स्तर प्राप्त करने के लिए मूर्तिपूजा और भौतिक रूप की पूजा का प्रयोग करना नीच और घटिया रीति है। ऐसा कोई ग्रंथ नहीं जिसमें यह स्पष्ट नहीं किया गया हो। क्योंकि वह भौतिक वस्तुओं के द्वारा की गयी आराधना है। फिर भी भारत में विग्रहराधना को सभी लोगों पर थोपने के लिए किए गए यत्नों का विरोध करने के लिए मेरे पास कोई शक्तिशाली भाषा नहीं।'' (विवेकानन्द साहित्य सर्वस्व 3:278)

''समृति, पुराण और तंत्र, यदि ये सब वेदों से संबंधित है तो स्वीकार करना चाहिए। यदि ये वेदों के विरुद्ध हैं तो अविश्वसनीय मानकर वर्जित हैं। परन्तु आजकल वेदों से भी ऊँचा पद पुराणों को दिया गया है। वेदों के विरुद्ध कई बातें पुराणों में देखी जा सकती है।'' (विवेकानन्द साहित्य सर्वस्व 3:345)

''मंत्र जप करके आह्वान करने पर देवता आ जाता तो इस विग्रह में चेतना क्यों नहीं आ जाती? सुनो मूर्ख लोगो, ये झूठे लोग तुम्हें अपने स्वार्थ के लिए ठग रहे हैं। वेदों में पत्थरों से बने विग्रहों की आराधना के बारे में, परमेश्वर के आह्वान और विसर्जन के बारे में, एक भी शब्द नहीं लिखा। आजकल दिखाई देने वाला तंत्र कर्म स्वनिर्मित है। वेदों का लिखा इसमें कुछ नहीं।'' (सत्यार्थ प्रकाश, पृष्ठ 517)

यदि यह उद्घोषणा आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी कर रहे हैं तो तुम विवेकपूर्ण लोग यह समझो कि आजकल होने वाली कोई भी ईश्वराधना वेदाधिष्ठित नहीं है, बल्कि कई लोगों की जीविका का साधन है। यही नहीं, आराधना की गलत रीति मनुष्य को नरक में पहुँचा देती है– यह भी वेदों में स्पष्ट लिखा है।

''अंधतमः प्रविशंती येलसं भूतिभुपासातेततो भुय इवते तमोय संभुत्याग्रताः (येजुर्वेद, 40 म. 9)

जो कोई असंभूति (स्वयंभू) को यानि अनादि और अनुत्पन कारण रूप प्रकृति को ब्रह्मा के स्थान पर उपासना करते हैं वे अंधकार में, अज्ञान और दुःख-सागर में डूब जाएँगे। इस प्रकार संभूति को अर्थात् धूल, मिट्टी, पत्थर, लकड़ी और मनुष्य आदि के शरीर को ब्रह्मा (ईश्वर) के स्थान पर उपासना करने वाले महामूर्ख, बड़े अंधकार में और भीषण नरक में गिर कर लम्बे समय तक भयंकर दुःख भोगेंगे।

इस महान सत्य को ग्रहण करके बाइबिल और कुरान ने विग्रह आराधना और बहुदेवाराधना का स्पष्ट रूप से खण्डन किया है। इसलिए तुम लोग येसु में विश्वास करते हुए, पश्चाताप करके ईश्वर के मार्ग में आ जाओ। येशु की शरण में आकर ही ईश्वर की आराधना पूर्ण होती है। येशु का धर्म–येशु का मार्ग–यह सत्य का, शांति का और मुक्ति का मार्ग है। इसी मार्ग पर चलते हुए हम सभी अधर्मों और अंधविश्वासियों से मुक्त हो जाएँगे। ऐसा करने पर हम ईश्वर की कृपा और संरक्षण अपने हर क्षण अनुभव करेंगे।

''तुम सत्य को पहचान जाओगे और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र बना देगा।'' (योहन 8/32)

येशु ही सत्य है। केवल उन्हीं के पीछे चलना है। येशु पर विश्वास करके, केवल उन्हें ही गुरू मानने के बाद, उन का पीछा करने का महत्व मैं सबको बता रहा हूँ। लेकिन बहुत लोग मुझ से पूछते हैं कि हममें और ईसाईयों में क्या फर्क है? वे भी व्याभिचार करते हैं, मदिरा पीते हैं, हत्या करते हैं जैसे हिन्दु करते हैं, फिर येशु में विश्वास करने की क्या आवश्यकता है? मेरा उत्तर यह है कि भाई तुम गलती कर रहे हो। थॉमस, जॉर्ज, इलिज़ाबेथ के द्वारा तुम येशु को समझने की कोशिश कर रहे हो। यही तुम्हारी गलती है। ये सब नाम के ईसाई हैं। ये सब येशु के वचनों की गहराई नहीं समझते।

## कार्ल मार्क्स और महात्मा गाँधी पर येशु का प्रभाव :

येशु के महत्व को आत्मसात करने के बाद मुझे कई बार सपने में कार्लमार्क्स और महात्मा गाँधी जी दिखाई देते थे। इन दोनों के बारे में समझना ही इन सपनों का मतलब है। यह पता चलने पर मैं मार्क्स का 'मूलधन' और गाँधी जी की 'मेरा सत्यान्वेषण और परीक्षण' दोनों पुस्तकों का अध्ययन करने पर मुझे समझ आया कि येशु ने उन्हें बहुत प्रभावित किया है।

यहूदी मार्क्स को कठिन परिश्रम और पीड़ितों की रक्षा करने की प्रेरणा येशु से ही मिली है। ''थके माँदे और बोझ से दबे हुए लोगों तुम सभी मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूँगा'' (मत्ती 11/28) इस वचन ने मार्क्स को बहुत प्रभावित किया। और अपनी निजी संपत्ति का निर्मार्जन, उन का अपना निजी अभिप्राय नहीं था। पहले पहल येशु के अनुयायी एक हृदय से इक्ट्ठे होकर अपनी- अपनी सम्पत्ति को बेचकर जरूरतमंदों में बाँटते थेः ''सब विश्वासी एक-हृदय थे। उनके पास जो कुछ था, उस में सबों का सांझा था। वे अपने चल-अचल संपत्ति बेचते थे और उस की कीमत हर एक के ज़रूरत के अनुसार सबों में बाँटते थे।'' (प्रेरित चरित 2/44-45) यही था पहला समाजवाद। लेकिन मार्क्स येशु के आत्म-स्तर को पूर्ण रूप से समझ नहीं पाया। आत्मज्ञान के द्वारा ही सामाजिक क्रांति संभव है। यह सत्य उसके मन से छूट गया। उसका कारण था कि उस समय के येशु के अनुयायी येशु से दूर हो कर साधारण और पीड़ित लोगों को नज़रअंदाज करते हुए केवल रीति-रिवाजों में पड़ गये थे। इस प्रकार समाजवाद की शुरूआत हुई। पेट भर खाने वाले लोगों के अधर्म के लिए मार्क्सवाद इलाज़ नही है। इसके लिए आत्मज्ञान की आवश्यकता है। फिर भी मार्क्स का धर्म के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट था। ''अमर येशु की पूजा करने वाला ईसाई धर्म, एक ईश्वर में विश्वास– यही है सब से उचित धर्म।'' (मूलधन 1:125) यह बात मार्क्स ने अपनी पुस्तक में खुलकर बताई है।

यदि गाँधी जी के सिद्धांतों को देखे तो पता चलता है कि वे भी येशु से प्रभावित, येसु के ऋणी हैंः ''अपने शत्रुओं से प्रेम करो। जो तुम से बैर करते हैं, उनकी भलाई करो। जो तुम्हें शाप देते हैं, उन को आशीर्वाद दो। जो तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो। जो तुम्हें सताते हैं उनके लिए प्रार्थना करो। जो तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारता है, दूसरा भी उसके सामने कर दो।'' (संत लूकस 6/27-9) ये वचन गाँधी जी का अपना आशय नहीं है बल्कि साक्षात् येशु का है। और येसु ने यह बात सिर्फ कही नहीं बल्कि उन्होंने इसे अपने जीवन में करके दिखाया। गाँधीजी भी येशु के आत्मस्तर को पूर्ण रूप से समझ नहीं पाये। उन्होंने कहा कि 'यदि येसु ईश्वर का पुत्र है तो हम भी ईश्वर की संतान हैं। हाँ, हम भी ईश्वर की संतान होंगे यदि हम भी येशु के समान बनें तो। येशु के जैसे गुण हममें क्यों नहीं उत्पन्न हो रहे हैं?

यदि हम पूर्ण रूप से ईश्वर के आदेशों का पालन करते हुए जीवन बिताएँ तभी हम स्वयं को ईश्वर की संतान कहलाने के योग्य होंगे। दूसरे शब्दों में कहें तो यदि पवित्रात्मा हमारे भीतर निवास करे तभी हम ईश्वर की संतान कहलाएँगे। मार्क्स और गाँधी जी ने येशु के वचनों में से केवल थोड़ा-सा अंश ही स्वीकार कर अपने-अपने आन्दोलनों की नींव डाली। गाँधी जी ने कहा ''ईसाई धर्म संपूर्ण धर्म है– यह मैं स्वीकार करने में समर्थ नहीं हो पाया।'' लेकिन मार्क्स ने खुलकर कहा कि मानव के लिए सबसे उचित येशु का ईसाई धर्म है। गाँधी जी और मार्क्स येशु को पूर्ण रूप से स्वीकार क्यों नहीं कर पाए? इस प्रश्न का उत्तर ढूढने का प्रयत्न किया तो पाया इन दोनों के समय का ईसाई समुदाय ही इस के लिए जिम्मेदार है। अभी भी वैसा वातावरण चल रहा है– यह बात आत्म-निरीक्षण करने के लिए पूरे ईसाई समुदाय को बाध्य करती है।

**स्वामी ज्ञानोदय,**
पोस्ट बॉ. नं. 30 कन्नूर - 1, केरल